ओ३म्

सत्यापन क्रमांक : RAJHIN/2015/60530

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

हिन्दी मासिक

वर्ष : ४ अंक : ४१ १ अप्रैल २०१८ जोधपुर (राज.) पृ.:३६ मूल्य १५० रु-वार्षिक

ऋग्वेद

अथर्ववेद

यजुर्वेद

महर्षि दयानन्द सरस्वती

सामवेद

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास में नव वर्ष की पूर्व सन्ध्या की झलकियाँ

आर्य समाज पाणिनिनगर में नववर्ष व स्थापना दिवस की प्रमुख झलकियाँ

आर्य समाज जालोरियों का बास में नववर्ष व स्थापना दिवस की प्रमुख झलकियाँ

नगर आर्य समाज में नव वर्ष के उपलक्ष्य में यज्ञ

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । -ऋग्वेद ९।६३।५

सबको श्रेष्ठ बनाओ

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश का मुख्य प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, व उनके द्वारा लिखित समस्त साहित्य तथा उनके सार्वभौमिक अद्वितीय कार्यों व सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार, स्थापना व व्यवहार में साकार करने के लिये कार्य करना ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

वर्ष : ४ अंक : ४१

दयानन्दाब्द : -१९४

विक्रम संवत् : वैशाख २०७५

कलि संवत् ५११९

सृष्टि संवत् :१,९६,०८,५३,११९

मार्गदर्शक

पं. सत्यानन्दजी वेदवागीश,

सम्पादक मण्डल :

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

डॉ. सुरेन्दकुमार, हरिद्वार

डॉ. वेदपालजी, मेरठ

पं. रामनारायण शास्त्री, सिरोही

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

कार्यवाहक सम्पादक :

कमल किशोर आर्य

Email: sampadakmdsprakash@gmail.com

9460649055

प्रकाशक :

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जसवन्त कॉलेज के पास, जोधपुर ३४२००१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है । किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र जोधपुर ही होगा ।

Web.-www.dayanadsmritinyas.org.

वार्षिक शुल्क :१५० रुपये

आजीवन शुल्क : ११०० रुपये (१५वर्ष)

अनुक्रमणिका

	क्या	कहाँ
१.	सम्पादकीय.....	४
२.	स्तुति व प्रार्थना...	१०
३.	वेद वचन....	११
४.	तरणि और ज्योतिष्कृत....	१३
५.	दयानन्द कौन है ?.......	१४
६.	अथ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका......	१६
७.	ऐहिक जीवन का अन्तिम दृष्य...	२२
८.	ऋषिगाथा...	२६
९.	विकासवाद का वैदिक सिद्धान्त.....	२८
१०.	नवसंवत्सेरिष्ट	३०
११.	वाहन रैली...	३३
१२.	सिरोही महाराजकुमार का...	३४

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

बैंक ऑफ बडौदा खाता संख्या-01360100028646

IFSC BARB0JODHPU

यह पांचवा अक्षर जीरो है

ओ३म्

सम्पादकीय

जन्मना जातिवाद की जकड़ में जर्जरता की ओर जाती जाति

२ अप्रैल २०१८ ! भारत बंद!! कारण ?? सर्वोच्च न्यायालय का एक फैसला!

किस मामले में कैसा फैसला है?

महाराष्ट्र के तकनीकी शिक्षा विभाग के एक अनुसूचित जाति के भण्डारपाल के वार्षिक गोपनीय प्रतिवेदन में गैर अनुसूचित जाति के दो अधिकारियों ने कर्मचारी की निष्ठा और आचरण पर विपरीत टिप्पणी कर दी। इसी को लेकर भण्डारपाल ने २००६ में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (उत्पीड़न निषेध) अधिनियम १०८६ की धारा ३ की विभिन्न उपधाराओं व भा. दं. सं. की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत एफआईआर दर्ज करा दी। जाँच अधिकारी ने दोनों अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही की स्वीकृति नियंत्रक अधिकारी से मांगी। नियंत्रक अधिकरी ने २०११ में स्वीकृति की मनाही कर दी। कर्मचारी ने २०१६ में उनके विरुद्ध भी एफआईआर दर्ज करा दी। नियंत्रक अधिकारी ने अग्रिम जमानत कराकर उच्च न्यायालय में कर्मचारी द्वारा दर्ज कराई गई एफआईआर पर कार्यवाही रोकने की प्रार्थना की। उच्च न्यायालय ने उनकी प्रार्थना खारिज़ कर दी। तब वे माननीय सर्वोच्च न्यायालय की शरण गए। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सभी पक्षों को सुनकर, निष्पक्ष न्यायमित्रों (एमिस्कस क्यूरी) और सरकारी अधिवक्ताओं से विमर्श करते हुए अपने ८६ पृष्ठ के विस्तृत फैसले के अंत में पॉच मदों में निष्कर्श दिया है।

निष्कर्श १ में अपीलार्थी के विरुद्ध भण्डारपाल द्वारा की गई कार्यवाही निरस्त की गई। निष्कर्श २ के अनुसार प्रथम दृष्ट्या मामला न बनने और न्यायिक विचारण में मामला दुर्भावना से किया पाया जाने पर अग्रिम जमानत पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं हो सकता। निष्कर्श ३ में गिरफ्तारी के दुरुपयोग को देखते हुए इस अत्याचार अधिनियम के अंतर्गत किसी लोक सेवक की गिरफ्तारी के लिए उसके नियुक्ति अधिकारी का अनुमोदन आवश्यक किया गया तथा गैर लोक सेवकों की गिरफ्तारी आवश्यक होने पर– वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के अनुमोदन पश्चात्, गिरफ्तारी के कारण दर्ज करके हो सकेगी। इन कारणों का परीक्षण करके मजिस्ट्रेट द्वारा आरोपी को आगे निरुद्ध करने पर निर्णय लिया जाएगा। चौथे निष्कर्श में किसी निरपराध को व्यर्थ की उलझन से बचाने के लिए प्राथमिक जाँच संबंधित पुलिस उपधीक्षक द्वारा की जा सकेगी कि इस उत्पीड़न कानून के तहत लगाए गए आरोप सारहीन या प्रेरित तो नहीं है। पाँचवें निष्कर्ष में कहा गया है कि तीसरे और चौथे निष्कर्ष का उल्लंघन अनुशासनिक कार्यवाही का कारण भी होगा और न्यायालय की अवमानना भी।

दो अप्रेल के भारत बंद के दौरान् हिंसक घटनाओं और आक्रोश को देखते हुए

सरकार ने तीन अप्रेल को माननीय सर्वोच्च न्यायालय में पुनरीक्षण याचिका दर्ज की। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अपने २० मार्च के निर्णय पर रोक न लगाते हुए सभी पक्षकारों से तीन दिन में अपना पक्ष प्रस्तुत करने का आदेश देते हुए सुनवाई दस दिनों के बाद रखी है।

सर्वोच्च न्यायालय ने कानून या नियमों के दुरुपयोग के मामले मे ऐसा आदेश कोई प्रथम बार नहीं दिया है। वैवाहिक प्रताड़ना वह घरेलू हिंसा के मामलों में औरतों द्वारा पुरुषों को नाहक घसीटे जाने पर ४६८ए के मामले में भी सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसा ही आदेश दिया था जिसकी अनुपालना आज तक भी की जा रही है। तीन तलाक, नौकरियों में भर्ती, पदोन्नति और पदोन्नयन में आरक्षण के मामलों में भी माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सरकारी और संसद द्वारा बनाए नियमों में समय समय पर संशोधन किया है, और अब भी करता है। हर व्यक्ति या वर्ग आंदोलन की तरफ नहीं जा सकता।

किंतु अनुसूचित जाति / जनजाति के लोग आज लामबंद हैं। विशेषकर इनके नेता लोग अपने निहित स्वार्थों के कारण अपने वर्ग के सीधेसादे लोगों को या स्वार्थी लोगों को या संकीर्ण सोच के लोगों को घेरकर अराजकता की राह में डाल देते हैं। इस अराजकता का नंगा नाच २ अप्रैल को देशभर में हुआ। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध सरकार या अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लोग स्वयं भी पक्षकार बनकर पुनर्विचार याचिका लगा सकते थे। इनका पक्ष न्याय पूर्ण होने पर सर्वोच्च न्यायालय सुनता– इसमें संदेह नहीं करना चाहिए था। किंतु यह मार्ग चुनने की बजाय अराजकता का व उत्पीड़न का मार्ग चुना, जिसके कारण दस घरों के चिराग बुझ गए; करोड़ों रुपए की सरकारी एवं निजी संपत्ति तबाह हो गई। भीड़ में विवेक नहीं होता। इस आंदोलन के लिए भी आरक्षण को खतरा बताकर दलितों को एकत्रित किया गया। निन्यानबे प्रतिशत आंदोलनकारी जानते ही नहीं कि फैसला एक व्यक्ति के मामले में उत्पीड़न कानून के दुरुपयोग को देखते हुए दिया गया है, जिसमे आरक्षण पर कोई विचारण ही नहीं है।

आंदोलन के चलते हुए और समाप्त होने के बाद देर रात्रि तक न्यूज चैनलों ने सभी वर्ग के लोगों, राजनीतिक पार्टीयों के प्रतिनिधियों को बुलाकर बहस छेड़ रखी थी। बहस में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय पर भारत बंद के उठाया गया कदम , इसके विकल्प, बंद के दौरान आंदोलनकारियों की अमानवीयता आदि पर जरूर प्रश्न किए गए।

किंतु हमारी चिंता कुछ और ही है। हिन्दू समाज में सुनियोजित विघटन तेज होता जा रहा है। हिन्दू समाज के झण्डाबरदार और धर्मधुरन्धरों से अधिक आशा नहीं की जा सकती। आर्यसमाज ने दलितों के लिए बहुत कुछ किया है और अब पुनः चेता है। किन्तु हिन्दूवादी संगठनों के संकीर्ण सोच, इनके द्वारा आर्यसमाज को अपना विरोधी समझना, आर्यसमाज के संगठनात्मक फैलाव को अपने संगठनों के फैलाव का सुनियोजित रूप से साधन बनाकर आर्यसमाज के आंदोलन को कुन्द करना इनकी रणनीति बन गया है, जिसके

फलस्वरूप ये लोग आर्यसमाजी के रूप में आरक्षण व दलित उत्थान को अन्याय बताते हुए दलितों के प्रति आर्यसमाज में उदासीनता लाने में तो सफल हुए ही हैं। परिणाम यह भी हुआ है कि पिछले कुछ समय से दलितों और पिछड़ों ने हिंदू समाज के साथ–साथ आर्य समाज को भी प्रश्नगत करना शुरु कर दिया है। आर्यसमाज में घुसपैठ कर चुकी हिंदूवादी मानसिकता ने इसमें सहयोग किया है, जिसके कारण आर्यसमाजियोंमें भी आरक्षण विरोध के रूप में दलित विरोध देखा जा रहा है। और सोशियल मीडिया में आर्यसमाजी भी आर्थिक आधार पर आरक्षण की मांग करने लगे हैं। वे भूल रहे हैं कि आरक्षण का आधार आर्थिक नहीं, सामाजिक है। वह भी केवल हिन्दू–सामाजिक। जिस दिन गरीबी और अमीरी इसका आधार बन गया, इसका लाभ गैर हिन्दू बहुतायत से लेने की मुहिम चलाएंगे, और विभाजित हिन्दू इसे रोक नहीं पाएंगे। इससे धर्मांतरण को बहुत बढ़ावा मिलेगा।

हमारा लक्ष्य इस समस्या को हिन्दूवादी और आर्यसमाज के संगठनों की दृटि से देखना नहीं है। जो भी हिन्दू इस समस्या को अपनी मानेगा, वह हिन्दू आर्यसमाजी ही होगा। अतः इस समस्या का हल तो आर्यसमाज ही है। हमारी प्रमुख चिंता इस आंदोलन की पृष्ठभूमि में ऋषि–संतानों की एकता हैं, जिनमें दलित भी सम्मिलित है और सवर्ण भी; आर्यसमाजी भी और सामान्य हिन्दू भी। इसके बिना हमारा अस्तित्व असंभव होगा।

मैं आरक्षण का पक्षधर नहीं हूं और इसके एक क्षण भी लागू रखने का प्रबलतम विरोधी हूँ। किंतु विकल्प चाहिए! क्यों चाहिए? तो आरक्षण के कारण पर विचार कीजिए!

आरक्षण का सुनिश्चित कारण सामाजिक विषमता है और इस सामाजिक विषमता की माँ जन्मना जातिवाद है। क्या हिंदू समाज ने सामाजिक विषमता के कारणों को हटाया है? दलित वर्ग की या आरक्षित वर्ग की एक बाई रामदेवरा का प्रसाद लाकर स्टाफ में बॉटती है और सवर्ण लोग उससे प्रसाद लेकर माथे पर तो लगाते हैं, पर खाने की बजाए पुड़िया बांधकर रख लेते हैं। बाई के पूछने पर कहते हैं– खाने के साथ खाएंगे और यथार्थ में या तो किसी अन्य को दे देते हैं अन्यथा कुत्ते को डाल देते हैं। वह बाई भी समझती है कि जब कोई सवर्ण प्रसाद का डिब्बा लाता है, तो बिना भोजन का इंतजार किए सभी लोग खाते हैं। दलितों को सवर्णों के कुएॅ से पानी भरने नहीं दिया जाता है। मंदिरों में नहीं जाने दिया जाता है। अपराधियों की मौत पर आंदोलन करने वाली करणी सेना भीमसेना से लोहा लेती है। (देखेंगे कभी इनका यही जज्बा, जब कभी विधर्मी भारत बंद का आह्वान करेंगे) आज भी दलितों के साथ रोटी बेटी का संबंध नहीं है। दलित के हाथ का खाते नहीं हैं। दलित को घर के अंदर नहीं बुलाते हैं। अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में भी दलित बच्चों के साथ नहीं बैठने देते। स्कूलों की सफाई भी दलित बच्चों से ही करवाते हैं। आज भी दलित दूल्हे को घोड़ी से उतारा जाता है। एक दलित से प्रेम करने वाली लड़की यदि उसके साथ भाग जाती है, तो काट दिया जाता है दोनों को!

कैसे तुलना करेंगे आप दो बालकों की, जब एक बालक को स्कूल भेजने के लिए

माता और पिता दोनों उपलब्ध होते हैं और दूसरे बालक के माता और पिता सड़कों पर सफाई करने के लिए निकल चुके होते हैं। एक बालक सामाजिक प्रतिष्ठा के माहौल में जीता है और दूसरा भले ही राजपत्रित अधिकारी का पुत्र हो, किंतु सामाजिक हिकारत के माहौल में जीता है। जब विद्यार्जन के अवसर की समानता ना हो, सामाजिक हिकारत हर पल मस्तिष्क को कचोटती रहती है, तो परिणाम में होने वाली विषमता कुछ तो संरक्षण मांगती है। यह संरक्षण आप एक कंगाल पुत्र से लेकर राजपुत्र तक को एक ही गुरुकुल में तुल्य खानपान व शिक्षा महर्षि दयानन्द की व्यवस्थानुसार प्रदान कर नहीं कर सकते, तो उसकी पूर्ति का आरक्षण के अतिरिक्त कोई तो मार्ग बताओ!

आरक्षण विरोधी कहते हैं– दलितों एक घर में चार–चार राजपत्रित अधिकारी है, चार लाख प्रतिमाह की आमदनी है। फिर भी उनकी संताने आरक्षण का लाभ ले रही है। मेरी चिंता यह है कि जिस दलित के घर में चार लाख की आमदनी है और चार–चार राजपत्रित अधिकारी – जिनमें एक व्याख्याता प्रोफेसर अर्थात् कर्मणा ब्राह्मण है; दूसरा सेना में अफसर अर्थात कर्मणा क्षत्रिय है; तीसरा सरकारी विपणन संस्थानों पर राजपत्रित अधिकारी अर्थात कर्मणा वणिक है और चौथा इंजीनियर अर्थात् विश्वकर्मा है। क्या कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य उस परिवार के साथ रोटी बेटी का संबंध स्थापित करता है? आईएएस बनने के बाद भी अपनी प्रशासनिक हैसियत को छोड़कर एक दलित सवर्णों का स्नेहपात्र आज भी नहीं है।

कहने को तो आप दलित अधिकारी को भी दलित नहीं मानते! किन्तु देश का सर्वोच्च पदाधिकारी भी दलित कैसे होता है, इसका पता तब चलता है जब उसके पद के कारण मना तो नहीं कर सकते, किंतु वह किसी मंदिर में चला जाए तो उसके जाने के बाद मंदिर को दूध से धोते हैं। पुष्टिमार्गीय संप्रदाय के नाथद्वारा मंदिर में हरिजनों के प्रवेश को लेकर आर्य समाज को आंदोलन करना पड़ा। किंतु अवस्था फिर भी वही है! यह सब कुछ हम उन्हें हीन मानकर ही करते हैं! सामाजिक व्यवस्था में अमानवीय आधार पर समानता से वंचित करने के कारण गरिमा और निर्वहन के लिए शासन ने अपने तंत्र में उन्हें आरक्षण दिया। शासकीय और कानूनी गरिमा हम इन्हें देने के लिए बाध्य है–इसका पता हमें तब चलता है, जब आर्थिक, विधिक और प्रशासनिक दृष्टि से कुछ भी होते हुए हम इन्हें सामाजिक गरिमा प्रदान नहीं करते। तो इनको आरक्षण का आधार मिटा कहाँ?

दूसरा दृष्टिकोण: आरक्षण पूर्व की सामाजिक विषमता के दौर में संपन्न रहे ब्राह्मणों के चौथी, पांचवी, छठी पीढ़ी के लोग अब संपन्न नहीं रहे। इसका कारण आरक्षण कम, आधुनिकता अधिक है। फिर ब्राह्मण भी आरक्षण मांग रहे हैं– आर्थिक आधार पर। अब सोचें, जिस दलित परिवार में चार राजपत्रित अधिकारी है, उनकी आने वाली पीढ़ियों की संपन्नता की क्या आप गारंटी लेते हैं? किन्तु एक अनपढ़ ब्राह्मण, अयोग्य ब्राह्मण, हमारे अज्ञानी और अनपढ़ सोए हुए समाज में संपन्न होकर जीवित रह सकता है। ऐसे प्रत्यक्ष उदाहरण गांवों में देख सकते हैं कि संस्कार कराने वाले ब्राह्मण कितने पात्र और विद्वान होते हैं! उन्हें सरकारी

नौकरी की जरूरत नहीं होती। ब्राह्मण होने मात्र के कारण समाज उसका भरण पोषण करता है। एक दलित परिवार के मामले में यह नहीं कहा जा सकता!

और सोचें! राजा, महाराजा, राव, ठाकुर और अन्य रियासती ओहदेदारों की अधिकांश हवेलियां आज होटल यानि सराय बन चुकी हैं और इनके मालिक, होटल या सरायवाले! आप भी ऐसे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य पुत्रों को जानते होंगे जो कार्यालयों में दलित अधिकारियों के नीचे तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी पदों पर कार्यरत हैं। मनुस्मृति के गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था को लागू करो, तो क्या होना चाहिए!

बाबा साहब अंबेडकर को भी आरक्षण दिया था बड़ौदा नरेश ने, बिना कानूनी प्रावधान के! प्रतिभा का लोहा सारी दुनिया मान रही है! अन्यथा एक और एकलव्य की कहानी भारतीय संस्कृति को प्रश्नगत करती। आप कह सकते हैं बौद्ध बन कर समाज को तोड़ा। किंतु बौद्ध मत के प्रवर्तक तो एक क्षत्रिय थे; जैनमत के भी क्षत्रिय थे; चार्वाक मत तो ब्राह्मणों ने ही चलाया। स्त्री–शूद्रों को तो संस्कृत पढ़ने का अधिकार ही नहीं था! वैष्णव, भौव, साक्त आदि मत–पंथ आदि हजारों मत भी ब्राह्मणों ने ही चलाए और आज भी नये नये मत चलाने वाले अधिकांशत सवर्ण ही है। इस समाज को जन्मना जाति व्यवस्था देने वाला ब्राह्मण वर्ग दलित नहीं, सवर्ण ही है।

आरक्षण विरोधियों के कई तर्क अपने स्थान पर सही हैं। उनमें से कुछ तो इतने प्रबल है कि उनके आधार पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय भी फैसले देता है। किन्तु राजनेता और वोट की राजनीति बार बार न्याय पर पानी फेरते हैं। राजनेता और न्यायालय दोनों ही आरक्षण के कारण को नहीं मिटा सकते। कारण को मिटाने की जिम्मेवारी उस समग्र समाज की है, जिसके आरक्षित और अनारक्षित वर्ग दोनों ही घटक है।

वैसे तो सम्पूर्ण मानव जाति एक जाति है। फिर भी हिंदू समाज को अपनी व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में गंभीरता से सोचना चाहिए कि जन्म से तो गौत्र होती है, वर्ण और जातियाँ तो जन्म से नहीं होती। क्या पँवार, सोलंकी, देवड़ा जैसी गौत्र राजपूत समाज में, माली सैनी समाज में, क्षौरकार या नाईसमाज में, कंसारा या ठठेरा समाज में नहीं होती? वंशावलियाँ लेकर बैठने से एक गौत्र का एक ही पूर्वज की संतान होना सुनिश्चित है। यह जीता जागता प्रमाण है इस बात का, कि जन्म से सिर्फ गोत्र होती है; वर्ण और जाति तो गुण कर्म और स्वभाव से होती है।

फिर भी जन्मना जातिवाद के जहर से जकड़ा हिन्दू जातिवाद को ईश्वरीय व्यवस्था बताकर इसे तोड़ने की हिम्मत नहीं कर पाता। ऐसे समय डॉ0 धर्मवीर जी की बात याद आती है। कायमखानी इस्लाम अपनाने से पूर्व राजपूत थे, दाऊदी बोहरा ब्राह्मण थे, सोलंकी, टाक, चौधरी आदि गौत्र तो आज तक मुसलमानों में यथावत मिलती है। यदि जाति जन्म से ही होना ईश्वरीय विधान है तो इन मुसलमानों के साथ राजपूतों, ब्राह्मणों और अन्य गौत्रवालों ने रोटी बेटी का संबध क्यों तोड़ दिया?

आज देश के हालात यह है कि हिन्दुओं के विभाजित वोट राजनीति को प्रभावित करने की स्थिति में नहीं रह जाएंगे। गैर हिन्दुओं के मत हिन्दूवादी नेताओं को मिल नहीं सकेंगे। भ्रष्टाचार और हिन्दूविरोध की नीतियों को भुनाकर भाजपा इस बार तो सत्ता में आ गई। किन्तु आगे चुनौती बहुत कठिन है। अब तो अमेरिकी चुनाव में भी विदेशी सलाहकारों

का प्रभाव प्रत्यक्ष है। भारत अछूता कैसे रह सकता है! युवराज लम्बी विदेश यात्राओं में क्या प्रशिक्षण लेकर आए हैं– कौन जाने। किन्तु कुछ समय से हिन्दूवादी संगठनों को दलित विरोधी घोषित किया जा रहा है और इन संगठनों के प्रमुख इसे स्वीकार भी करते हैं कि उन्होनें दलितों के लिए कुछ नहीं किया। निश्चित जानिए कि आगामी चुनाव से पहले हिन्दुओं को जातिगत आधार पर बहुध्रुवीत करने के पूर्ण प्रयास होंगे।

हिन्दुओं के जो झण्डाबरदार चक्रवर्ती राज्य खोने पर भी, गुलाम बनने पर भी, देश के टुकड़े टुकड़े होने पर भी नहीं जागे, अपने ही चरणों (दलितों) को काटकाट कर विरोधी मतों को भेंटस्वरूप दे रहे हैं, द्विज अल्पसंख्यक बनकर टूटते जा रहे हैं, घर की बेटियों के विधर्मियों के साथ भागने पर भी असहाय हो बैठे रहते हैं, क्या वे इन हमलों के निवारण में समर्थ है? अभी तो विभाजनों के स्तर सामने नहीं आए हैं। जैसे जैसे छोटा होता जाएगा, त्यौं त्यौं छोटे विभाजन याद आएंगे। पहले मात्र आर्य और दस्यु का विभाजन था। फिर चक्रवर्ती राज्य टुकड़ों में बँटा। फिर देश टुकड़ों में बँटा। फिर बहुदेववाद आया। उसके माध्यम से मत बढ़ें, नवीन संप्रदाय बने, गुण–कर्म–स्वभावानुसार वर्णाश्रम धर्म का नाश हुआ, भाइ्रों को विदेशी मत वाले रेवड़ बनाकर ले चले। वणिक और ब्राह्मण स्वयं पृथक हो अल्पसंख्यक हो चुके हैं। अब क्षत्रिय अपनी अलग चाल में संगठन के नाम पर अपराधियों की मौत पर भी राजनीति यानि अनीति कर रहे हैं और ब्राह्मण लोग अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा या वशिष्ठ को आदर्श बनाकर नहीं, वरन् पौराणिक आख्यानानुसार धरा को क्षत्रियशून्य करने वाले परशुराम जी को आदर्श बनाकर बाँहें चढ़ा रहे हैं। आरक्षित वर्ग की मीणा और नायक जातियाँ अदालत में उलझी है। अपने ही घर तक में विभाजन है! हिन्दुत्व के आधार पर सत्ता प्राप्त करने वाले संघ परिवार और भाजपा को गंभीरता से सोचना होगा कि हिन्दुओं में रोटी बेटी का संबध हिन्दुत्व के आधार पर नहीं जाति के आधार पर होता है। इस कमजोरी को भुनाया जाता रहेगा। एक फैसले पर प्रतिक्रिया और उसपर सामाजिक विक्षोभ इसका उदाहरण है।

क्या जन्मना जातिवाद की इस भयानक विनाशकारी जकड़ में जर्जरता की ओर जाती इस हिन्दू जाति को किसी बाहरी दुश्मन की कभी आवश्यकता रही या रहेगी??? आर्यों को तो हर कदम बहुत सोचसमझ कर उठाना है, क्योंकि आरक्षण की इस लॉलीपॉप के रहते क्या कोई दलित अपना दलितपन अर्थात् आरक्षण छोड़ने को सहज ही तैयार हो जाएगा? सवर्ण सामाजिक दृष्टि से लाभ की स्थिति में होने से वर्तमान परिस्थिति में कभी परिवर्तन चाहेगा? आरक्षित वर्ग आरक्षण खतरे में देखकर गुणकर्म स्वभाव उदात्त होते हुए भी सवर्ण नहीं बनना चाहेगा।

तो आर्यसमाज क्या करे? पहला प्रयास सौमनस्य का होना चाहिए। इसकी पहल हर हालत में उनसे करवानी होगी, जो सहस्राब्दियों से लाभ की स्थिति में रहे हैं। इसका दबाव तभी बनेगा जब इस पक्ष को अज्ञानवश सींच रहे लोगों को जागरुक किया जाएगा। रोजगार में सरकारी नौकरियों का प्रतिशत अत्यल्प होने को रेखांकित करते हुए विराट सामाजिक आर्थिक परस्परतंत्र को समताजल से सींचना होगा। जन्मना जातिवाद का नाश लक्ष्य बनाना होगा। हमारे सजग पुरुषार्थ में कमी किसी के हित में नहीं है।

स्तुति-विषय

- आर्याभिविनिय से

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताᳬ श्रोत्रं कल्पतां वागयज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताᳬ स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पता यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। स्तोमश्च यजुश्च ऋक्च साम च बृहच्च रथन्तरं च। स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम प्रजापतेः प्रजा अभूम वेट् स्वाहा।।१३।।

—यजुः० १८।२१

व्याख्यान— (**यज्ञो वै विष्णुः, यज्ञो वै ब्रह्म, इत्याद्यैतरेय - शतपथब्राह्मणश्रुतेः**) यज्ञ-यजनीय जो सब मनुष्यों का पूज्य, इष्टदेव परमेश्वर है, उसके हेतु (उसके अर्थ तथा उसके सङ्ग) अतिश्रद्धा से (यज्ञ जो परमातमा उसके लिए) सब मनुष्य सर्वस्व समर्पण यथावत् करें, यही इस मन्त्र में उपदेश और प्रार्थना है।

"**आयुर्यज्ञेन कल्यतां-रथन्तरन्च**" हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर! आपकी जो यह आज्ञा है कि सब लोग सब पदार्थ मेरे अर्पण करें, इस कारण हम लोग आयु (उम्र), प्राण, चक्षु (आँख), कान, वाणी, मन, आत्मा= (**जीव**) ब्रह्म=वेदविद्या, ज्योति(सूर्यादि लोक तथा अग्न्यादि पदार्थ) तथा स्वर्ग (**सुखसाधन**), पृष्ठ (पृथिव्यादि सब लोक आधार) तथा पुरुषार्थ, यज्ञ (जो-जो अच्छा काम हम लोग करते हैं), स्तोम= स्तुति, यजुर्वेद, ऋग्वेद, सामवेद, चकार से अथर्ववेद, बृहद्रथन्तर, महारथन्तर साम इत्यादि — सब पदार्थ आपके समर्पण करते हैं। हम लोग तो केवल आपके ही शरण हैं। जैसी आपकी इच्छा हो वैसा हमारे लिए आप कीजिए, परन्तु हम लोग आपके सन्तान आपकी कृपा से "**स्वरगन्म**" उत्तम सुख को प्राप्त हों। जब तक जीवें तब तक सदा चक्रवर्ती राज्यादि भोग से सुखी रहें और मरणानन्तर भी हम सुखी ही रहें। हे महादेवामृत! हम लोग देव (परमविद्वान्) हों तथा अमृत-मोक्ष जो आपकी प्राप्ति उसको प्राप्त होके जन्म-मरणरहित अमृतस्वरूप सदैव रहें। "**वेट् स्वाहा**" आपकी आज्ञा का का पालन और जिससे आपकी प्राप्ति हो, उस क्रिया में सदा तत्पर रहें तथा अन्तर्यामी आप हृदय में जो आज्ञा करें, अर्थात् जैसा हमारे हृदय में ज्ञान हो, वैसा ही सदा भाषण करें, इससे विपरीत कभी नहीं। हे कृपानिधे! हम लोगों का योगक्षेम (सब निर्वाह) आप ही सदा करो। आपके सहाय से सर्वत्र हमको विजय और सुख मिले।।१३।।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जयन्ती (श्रीरामनवमी)
नगर आर्यसमाज गुलाबसागर जोधपुर

चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा संवत् २०७५ रविवार २५ मार्च २०१८ को नगर आर्यसमाज गुलाबसागरजोधपुर में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जयन्ती (श्रीरामनवमी) पर प्रातः विशेष यज्ञ हुआ। यज्ञोपरांत समाज के सभी सदस्य नईसड़क से सरदारपुरा तक आयोजित शोभायात्राओ में व्यायामशालाओं के साथ सम्मिलित हुए।

(फोटो **अंतिमआवरण पर**)

वेद-वचन

विमान-विद्या

आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तस आशवः पतङ्गाः।

ये अप्तुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो नासत्या वहन्ति।। –१।११८।४ ऋगवेद

पदार्थः– हे **(नासत्या)** सत्य के साथ वर्त्तमान, **(अश्विना)** सब विद्याओं में व्याप्त स्त्री-पुरूषों! **(ये)** जो **(अप्तुरः)** अन्तरिक्ष में शीघ्रता करने **(दिव्यासः)** और अच्छी प्रकार खेलनेवाले **(गृध्राः)** गृध्र पखेरूओं के **(न)** समान **(प्रयः)** प्रीति किये, अर्थात् चाहे हुए स्थान को **(अभि वहन्ति)** सब ओर से पहुँचाते हैं, वे **(श्येनासः)** बाज पखेरू के समान चलने, **(पतंङ्गाः)** सूर्य के समान निरन्तर प्रकाशमान **(आशवः)** और शीघ्रतायुक्त घोड़ों के समान अग्नि आदि पदार्थ **(रथे)** विमान आदि रथ में **(युक्तासः)** युक्त किये हुए **(वाम्)** तुम दोनों को **(आ, वहन्ति)** पहुँचाते हैं।

भावार्थः– इस मन्त्र में उपमालंकार है। हे स्त्री-पुरूषों! जैसे आकाश में अपने पंखों से उड़ते हुए गृध्र आदि पखेरू सुख से आते-जाते हैं, वैसे ही तुम अच्छे सिद्ध किये विमान आदि यानों से अन्तरिक्ष में आओ-जाओ।

राजा तथा माता सत्योपदेश करें।

प्र नो यच्छत्वर्य्यमा प्र पूषा प्र बृहस्पतिः। प्र वाग्देवी ददातु नः स्वाहा।। –९।२९ यजुर्वेद

पदार्थः– जैसे **(अर्य्यमा)** न्यायाधीश **(नः)** हमारे लिए उत्तम शिक्षा **(प्रयच्छतु)** देवे, जैसे **(पूषा)** पोषण करनेवाला शरीर और आत्मा की पुष्टि की शिक्षा **(प्र)** अच्छे प्रकार देवे जैसे **(बृहस्पतिः)** विद्वान् **(प्र स्वाहा)** अत्युत्तम विद्या देवे, वैसे **(वाक्)** उत्तम विद्या, सुशिक्षासहित वाणीयुक्त **(देवी)** प्रकाशमान्, पढ़ानेवाली माता हमारे लिए सत्य-विद्यायुक्त वाणी का **(प्रददातु)** उपदेश सदा किया करे।

भावार्थः– यहाँ जगदीश्वर उपदेश करता है कि राजा आदि सब पुरुष और माता आदि स्त्री सदा प्रजा और पुत्रादिकों को सत्य-सत्य उपदेश कर विद्या और अच्छी शिक्षा को निरन्तर ग्रहण करावें, जिससे प्रजा और पुत्र-पुत्री आदि सदा आनन्द में रहें।

ईश्वर के मित्र को दुःख कहाँ?

प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः।

यस्य त्वं सख्यमाविथ।।१०८।। **–सामवेद**

पदार्थः– **(अग्ने)** हे परमात्मन्! वा भौतिक अग्नि! **(त्वं, यस्य, सख्यम्, आविथ)** तू जिसकी अनुकूलता को प्राप्त होता है **(सः)** वह **(तव)** तेरी **(वाजकर्मभिः)** बलकारिणी **(सुवीराभिः)** सुन्दर वीर्यवती **(ऊतिभिः)** रक्षाओं से **(प्र तरति)** पार हो जाता है।

भावार्थः– जो पुरूष परमात्मा के मित्र हैं वे उसकी ओर से हुई बलवती, पराक्रम और पुरूषार्थवती रक्षाओं में सर्वदु:खों से पार हो जाते हैं। उन्हें आत्मिक बल की सहायता मिलती है और जो लोग अग्नि के मित्र हैं, अर्थात् अनुकूल सेवी हैं वे भी [दु:खों से पार हो जाते हैं]।

असमृद्धे! दूर हट

परो पेह्यसमृद्धे वि ते हेतिं नयामसि।

वेद त्वाहं निमीवन्तीं नि तुदन्तीमराते।। –५।७।७ अथर्ववेद

पदार्थः– **(असमृद्धे)** हे असमृद्धे! **(परः)** परे **(अप इह)** चली जा **(ते)** तेरी **(हेतिम्)** बरछी को **(वि नयामसि)** हम अलग हटाते हैं। **(अराते)** हे अदानशक्ते! 'निर्धनता'! **(अहम्)** मैं **(त्वा)** तुझको **(निमीवन्तीम्)** निर्बलकरनेवाली और (नितुदन्तीम्) भीतर चुभनेवाली (वेद) जानता हूँ।

भावार्थः– मनुष्य महादु:खदायिनी निर्धनता को प्रयत्नपूर्वक दूर हटाएँ।

आर्यसमाज महर्षि पाणिनिनगर एवं आर्यसमाज मगरा–पूँजला जोधपुर

आर्यसमाज महर्षि पाणिनिनगर एवं आर्यसमाज मगरा– पूँजला जोधपुर ने श्रीरामनवमी का पर्व पाक से विस्थापित हिन्दू परिवारों के साथ उनकी बस्तियों में मनाया। जसवन्त सागर बांध के पास आंगनवा गॉव में हिन्दू शरणार्थियों को यज्ञ में बिठाते हुए श्री शिवराम आर्य के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ किया गया। तत्पश्चात् श्री सेवाराम आर्य ने श्रीराम के जीवन पर प्रकाश डाला। सायं चार बजे से छः बजे तक आयोजित इस कार्यक्रम में सत्संग के बाद प्रसाद वितरण किया गया।

(सभी फोटो **अंतिमआवरण पर)**

तरणि और ज्योतिष्कृत्

तरणिविश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम्।। – ऋग् १.५०.४

ऋषि: **प्रस्कण्व:** । देवता **सूर्य:** । छन्द **गायत्री**।

(**सूर्य**) हे परमात्म-सूर्य! [तू] (**तरणी:**) तरानेवाला, (**विश्वदर्शत:**) सबके द्वारा दर्शनीय [और] (**ज्योतिष्कृत्**) ज्योति प्रदान करने वाला (**असि**) है। [तू] (**विश्व**) समस्त (**रोचन**) दीप्त को (**आ भासि**) दीप्तिमान् करता है।

हे परमात्मन् सूर्य! तुम सूर्य ब्रह्माण्ड के दृष्टिगम्य ज्योतिष्मान् पिण्डों में सबसे तेजस्वी सूर्य ही दृष्टिगोचर होता है, जिससे हम तुम्हारे तेज की कुछ-कुछ तुलना कर सकते हैं। अतएव हम कह सकते हैं कि तुम तेज के साक्षात् सूर्य हो, सूर्य के समान स्वयं-प्रकाशमान और प्रकाशक हो। इसके अतिरिक्त तुम सरणशील, सर्वव्यापक , सर्व-प्रेरक और प्रकंपक होने से भी सूर्य-पद-वाच्य हो । हे ज्ञान के सूर्य! हे गुण-गरिमा के सूर्य! हे प्रशस्त क्रियाशीलता के सूर्य! तुम 'तरणी' हो, विपत्तियों और दु:खों के तम-स्तोम से तराने वाले हो, संसार-सागर से तरानेवाले हो, आवागमन से तराकर मुक्त करनेवाले हो। तुम हम डूबते हुओं की तारक नौका हो। हे प्रकाशपुंज! तुम 'विश्वदर्शत' हो , सबके द्वारा दर्शनीय हो। भौतिक प्रचंड सूर्य की ओर यदि हम चिरकाल तक दृष्टि बाँधकर देखें, तो हमारी आँखें अंधी हो जाएँ। पर तुम ऐसे विलक्षण सूर्य हो कि तुम्हारे दर्शन करने से तृप्ति लाभ होता है, अन्धे को भी दृष्टि प्रान्प्त हो जाती हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य के शब्दों में तुम द्रष्टव्य हो , श्रोतव्य हो, मन्तव्य हो, निदिध्यासितव्य हो – "**आत्मा वा अरे द्रष्टव्य: श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य:।**

हे देव ! तुम ' ज्यातिष्कृत' हो। जैसे सूर्य रात्रि के विस्तीर्ण तमोजाल को विच्छिन्न कर दिन की शुक्ल ज्योति प्रदान करता है, वैसे ही तुम मानव के अविद्यान्धकार को विदीर्ण कर हृदयाकाश में ज्ञान की शुभ्र ज्योति जगमगा देने वाले हो। संसार कहता है कि पृथिवी , मंगल, बुध , बृहस्पति, चन्द्र, विद्युत् आदि को चमकानेवाला भौतिक सूर्य है। पर असल में तो हे प्रकाशक प्रभु! ये सब तुम्हारी दी हुई दीप्ति से ही दीप्तिमान् हैं, यहाँ तक कि भौतिक सूर्य भी अपनी दीप्ति के लिए तुम्हारा ही ऋणी है। विश्व की सब प्रभाओं में तुम्हारी ही प्रभा का दर्शन करनेवाले ऋषि ने सत्य कहा है- " **तस्य भासा सर्वमिदं विभति**"। इसके अतिरिक्त सृष्टि के आरम्भ से अब तक जो प्रख्यात अन्तर्ध्यानी योगी महापुरूष दिव्य गुणों के प्रकाश से प्रकाशमान रहे हैं, वर्तमानकाल में विद्यमान है और भविष्य में होंगे, उन सबको भी दिव्य प्रकाश से प्रकाशित करनेवाले तुम्हीं हो। हे अलौकिक आभावाले! हमें भी अपनी आभा से भासित कर दो।

-वेद मञ्जरी से

दयानंद कौन है–५

(कर्मफल–अटलता–प्रतिपादक)

–कमल किशोर आर्य

जितने भी मत संप्रदाय संसार में चल रहे हैं, क्यों लोग इनके पीछे चलते हैं इस पर विचार करते हैं। जनसामान्य को बिना पुण्यमय पुरुषार्थ किए शाश्वत सुखों की उपलब्धि हो जाय तो वह उनके पीछे दौड़ेगा ही! ये सुख चाहे इस जन्म में मिले या अगले जन्म में! गंभीर विचार करने पर यह समझ में आता है कि अधिकांश मत सम्प्रदाय अपने अनुयायियों को मृत्यु के बाद स्वर्ग में अपार शाश्वत सुखों और सुखों को भोगने की अमिट शक्ति का वादा करते हैं और इस काल्पनिक स्वर्ग और सुखों की आशा में भारण में आए अनुयायियों के इस जन्म में किए सभी पाप क्षमा कराने का प्रबंध करते हैं। सम्प्रदायों के प्रवर्तक अमर तो नहीं है, हाँ! अपनी मौत के बाद इस सृष्टि के रचयिता के काल्पनिक दरबार में बैठ जाते हैं। इन्हीं असत्य आश्वासन, विश्वास, सिद्धांत और छलावों के बूते ये मत संप्रदाय कायम है। इनके अनुयायियों को यही कहा जाता है कि इन मिथ्या बातों पर संदेह होना स्वाभाविक है। उस सन्देह की निवृत्ति सिर्फ मृत्यु के दिन या कयामत के दिन हो सकती है। उससे पहले नहीं। भय यह कि जो भाक करेगा वह नरकगामी होगा और जो विश्वास करेगा उसे ही स्वर्ग मिलना है। विश्वासी और अविश्वासी दोनों के लिए परख का कोई भी अवसर मृत्यु से पहले नहीं छोंडते हैं ताकि झूठ की दुकान निर्विघ्न चलती रहे।

इस्लाम में सभी पाप कयामत के दिन मुहम्मद सिफारिश करके क्षमा कराएगा। मोहम्मद ने सबको यही भरोसा दिलाया कि मैं कयामत के दिन खुदा के पास बैठा हूं उसके दरबार में। तुम मुझ पर और मुझ पर नाजिल की गई कुरान पर ईमान लाओ, तुम्हारे सारे पाप क्षमा करता है अल्लाह मेरी सिफारिश से। चालाकियों और छल से गैरमुस्लिमों से शक्तिशाली बनो और शक्तिशाली बनने पर उनका कत्लेआम करो, जन्नत के अथाह सुख मिलेंगे। ईसा अपने अनुयायियों को भेड़ों के रूप में ही चाहता है जो अंधानुकरण करते उसके पीछे चल पड़े। वह खुदा है या खुदा का बेटा– यह भ्रम कोई ईसाई नहीं तोड पाया। कुरान और बाइबिल का ओल्ड टेस्टामेंट अरब के कबीलाई खून खच्चर के इतिहास से भरे हुए हैं। स्वर्ग की हुण्डियों की बिक्री ऐतिहासिक सच है। पता नहीं किस शान्ति का संदेश ये बर्बर अवैज्ञानिक विदेशी मत संप्रदाय देते हैं!

वैदिक धर्म के पतन और बर्बर विदेशी मतो के उत्थान और भारत में प्रवेश का कारण बने हिंदुओं के मत संप्रदाय तो स्वर्ग बॉटने में सबसे आगे है। इसके लिए न सम्प्रदाय को मानना जरूरी है और न प्रयास ही करना पड़ता है। बस, घृणिततम अपराध भी अनायास ही चकित करने वाले तरीकों समा हो जाते हैं। आप चोर हैं और शिवलिंग की उपेक्षा और अवमानना करते हुए उसके ऊपर लगे चांदीसोने के छत्र को चुराने के लिए शिवलिंग पर चढ़ते हैं तो महादेव मान लेंगे कि आप उसके शरणागत हो चुके हैं और वे आपके सामने प्रकट

होकर वरदान भी देने लगें तो आश्चर्य न करें। यदि कोई जघन्यतम अपराधी है। चोरी, जारी, बलात्कार, हत्या आदि अपराध करके आया है और वीराने में किसी पेड़ के नीचे सो रहा है और उसके ललाट पर किसी कौवे की विष्ठा आ गिरती है, तो विष्णुलोक के चर उसे लेने आ जाएंगे; सारे पाप क्षमा। ऐसे ही पौराणिक संप्रदायों के आचार्य अपने अपने संप्रदाय के अनुयायियों को सारे पाप क्षमा करा कर बहुत ही सस्ते में गोलोक, क्षीरसागर, विष्णुलोक, स्वर्ग आदि भव्य स्थान दिला रहे हैं। गुरुडम के आदी उपदेशक लोग अपने चरणों की सेवा में ही मोक्ष की सिद्धि दिलवाते हैं। इनके अन्धानुयायी नासमझी से इनके झूठे वादों और शिक्षाओं पर चलते हुए क्षमा के सरलतम मार्ग पर, विश्वास के भुलावे में किए जा रहे अपने दुष्कर्मों से दुनिया को नर्क बनाए हुए हैं। इनमें अहिंसावादी संप्रदायों के अनुयायी और उनके संप्रदाय भी कम दोषी नहीं है। अज्ञान, अन्याय और अभाव एकदूसरे के पूरक है। अतः अज्ञान फैलाने वाला भी अत्याचारी है। क्योंकि अज्ञानी लोग ही कर्म की उत्तमता पर विचार न कर निकृष्ट कर्म करते हैं। अतः जितने भी मिथ्या पंथ लोगों के पाप क्षमा करने की दुकान चलाते हैं, वे दुनिया की दुर्दशा के जिम्मेवार है। **किन्तु**

इस संसार के शत्रु, मानवता के शत्रु, जनसामान्य के शत्रु, बुद्धि और विवेक के शत्रु दुनिया को नर्क बनाने हेतु उत्तरदाई इन मतमतान्तरों के प्रवर्तकों और मानने वाले लोगों की भीड़ में निर्भ्रान्त सत्य की शुभ्र शिला पर अटल–ईश–विश्वास के सहारे खड़े हो अपरिहार्य कर्मफल की चेतावनी देते हुए, ईश्वरीय न्याय के अटल होने की मुनादी करते **मेरे देव दयानंद विरले ही हैं, अलग ही हैं, कोई भी उनके समकक्ष नहीं!**

वह कोई चमत्कार नहीं दिखाते, भुलावा नहीं देते, वरन अटल कर्मफल सिद्धान्त के कटु सत्य बताते हैं। महर्षि ने अपने अनेक ग्रंथों में कर्मों का फल अटल होना बताते हैं। किन्तु हम यहाँ महर्षि के अमरग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में से कुछ अंश नीचे उद्धृत करते हैं: –

१. "......जो दुष्ट कर्म करनेहारों को रुलाता है, इससे परमेश्वर का नाम 'रुद्र' है।

यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति, यद्वाचा वदति तत् कर्मणा करोति
यत् कर्मणा करोति तदभिसम्पद्यते।। यह यजुर्वेद के ब्राह्मण का वचन है।

जीव जिस का मन से ध्यान करता उस को वाणी से बोलता, जिस को वाणी से बोलता उस को कर्म से करता, **जिस को कर्म से करता उसी को प्राप्त होता है।** इस से क्या सिद्ध हुआ कि जो **जीव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है।** जब दुष्ट कर्म करनेवाले जीव ईश्वर की न्यायरूपी व्यवस्था से दुःखरूप फल पाते, तब रोते हैं और इसी प्रकार ईश्वर उन को रुलाता है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'रुद्र' है।"

२. "...**(यमु उपरमे)** इस धातु से 'यम' शब्द सिद्ध होता है। 'य सर्वान् प्राणिनो नियच्छति स यमः' **जो सब प्राणियों के कर्मफल देने की व्यवस्था करता और सब अन्यायों से पृथक् रहता है**, इसलिए परमात्मा का नाम 'यम' है।"

३. "...देखो, जब कोई प्राणी मरता है तब उसका जीव पाप, पुण्य के वश होकर परमेश्वर की

व्यवस्था से सुख दुःख के फल भोगने के अर्थ जन्मान्तर धारण करता है। क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी नाश कर सकता है?"

४. "....(प्रश्न) क्या जो यह संसार में राजा प्रजा सुखी दुःखी हो रहे हैं यह ग्रहों का फल नहीं है?
(उत्तर) नहीं, ये सब पाप पुण्यों के फल हैं।"

५. "...अब रह गई शीतला और मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि। ये भी ऐसे ही ढोंग मचाते हैं। कोई कहता है कि 'जो हम मन्त्र पढ़ के डोरा वा यन्त्र बना देवें तो हमारे देवता और पीर उस मन्त्र, यन्त्र के प्रताप से उस को कोई विघ्न नहीं होने देते।' उन को वही उत्तर देना चाहिये कि क्या तुम मृत्यु, परमेश्वर के नियम और कर्मफल से भी बचा सकोगे?"

६. "....नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।
शनैरावर्त्तमानस्तु कर्त्तुर्मूलानिन्तति।। मनु०।।
किया हुआ अधर्म निष्फल कभी नहीं होता परन्तु जिस समय अधर्म करता है उसी समय फल भी नहीं होता। इसलिये अज्ञानी लोग अधर्म से नहीं डरते। तथापि निश्चय जानो कि वह अधर्माचरण धीरे–धीरे तुम्हारे सुख के मूलों को काटता चला जाता है।------"

७. "...(प्रश्न) **ईश्वर अपने भक्तों के पाप क्षमा करता है वा नहीं?**
(उत्तर) नहीं। क्योंकि जो पाप क्षमा करे तो उस का न्याय नष्ट हो जाये और सब मनुष्य महापापी हो जायें। क्योंकि क्षमा की बात सुन ही के उन को पाप करने में निर्भयता और उत्साह हो जाये। जैसे राजा अपराधियों के अपराध को क्षमा कर दे तो वे उत्साहपूर्वक अधिक–अधिक बड़े–बड़े पाप करें। क्योंकि राजा अपना अपराध क्षमा कर देगा और उन को भी भरोसा हो जाय कि राजा से हम हाथ जोड़ने आदि चेष्टा कर अपने अपराध छुड़ा लेंगे और जो अपराध नहीं करते वे भी अपराध करने से न डर कर पाप करने में प्रवृत्त हो जायेंगे। इसलिये सब कर्मों का फल यथावत् देना ही ईश्वर का काम है क्षमा करना नहीं।

(प्रश्न) जीव स्वतन्त्र है वा परतन्त्र?

(उत्तर) अपने कर्त्तव्य कर्मों में स्वतन्त्र और ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है। 'स्वतन्त्रः कर्त्ता' यह पाणिनीय व्याकरण का सूत्र है। जो स्वतन्त्र अर्थात् स्वाधीन है वही कर्त्ता है।

(प्रश्न) स्वतन्त्र किस को कहते हैं ?

(उत्तर) जिस के आधीन शरीर, प्राण, इन्द्रिय और अन्तःकरणादि हों। जो स्वतन्त्र न हो तो उस को पाप पुण्य का फल प्राप्त कभी नहीं हो सकता। क्योंकि जैसे भृत्य, स्वामी और सेना, सेनाध्यक्ष की आज्ञा अथवा प्रेरणा से युद्ध में अनेक पुरुषों को मार के अपराधी नहीं होते, वैसे परमेश्वर की प्रेरणा और आधीनता से काम सिद्ध हों तो जीव को पाप वा पुण्य न लगे। उस फल का भागी प्रेरक परमेश्वर होवे। स्वर्ग–नरक, अर्थात् सुख–दुःख की प्राप्ति भी परमेश्वर को होवे। जैसे किसी मनुष्य ने शस्त्रविशेष से किसी को मार डाला तो वही मारने वाला पकड़ा जाता है और वही दण्ड पाता है, शस्त्र नहीं। वैसे ही पराधीन जीव पाप पुण्य का भागी नहीं हो सकता। इसलिये अपने सामर्थ्यानुकूल कर्म करने में जीव स्वतन्त्र परन्तु जब वह पाप कर चुकता है तब ईश्वर की व्यवस्था में पराधीन होकर पाप के फल भोगता है। इसलिये कर्म करने में जीव स्वतन्त्र और पाप

के दुःख रूप फल भोगने में परतन्त्र होता है।...

(प्रश्न) जो परमेश्वर जीव को न बनाता और सामर्थ्य न देता तो जीव कुछ भी न कर सकता! इसलिए परमेश्वर की प्रेरणा ही से जीव कर्म करता है।

(उत्तर) जीव उत्पन्न कभी न हुआ, अनादि है। जैसा ईश्वर और जगत् का उपादान कारण नित्य है। और जीव का शरीर तथा इन्द्रियों के गोलक परमेश्वर के बनाये हुए हैं परन्तु वे सब जीव के आधीन हैं। जो कोई मन, कर्म, वचन से पाप पुण्य करता है वही भोक्ता है ईश्वर नहीं। जैसे किसी कारीगर ने पहाड़ से लोहा निकाला, उस लोहे को किसी व्यापारी ने लिया, उस की दुकान से लोहार ने ले तलवार बनाई, उससे किसी सिपाही ने तलवार ले ली, फिर उस से किसी को मार डाला। अब यहां जैसे वह लोहे को उत्पन्न करने, उस से लेने, तलवार बनाने वाले और तलवार को पकड़ कर राजा दण्ड नहीं देता किन्तु जिस ने तलवार से मारा वही दण्ड पाता है। इसी प्रकार शरीरादि की उत्पत्ति करने वाला परमेश्वर उस के कर्मों का भोक्ता नहीं होता, किन्तु जीव को भुगाने वाला होता है। जो परमेश्वर कर्म कराता होता तो कोई जीव पाप नहीं करता, क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धार्मिक होने से किसी जीव को पाप करने में प्रेरणा नहीं करता। इसलिए जीव अपने काम करने में स्वतन्त्र है। जैसे जीव अपने कामों के करने में स्वतन्त्र है वैसे ही परमेश्वर भी अपने कर्मों के करने में स्वतन्त्र है।

८. "..... जीवों को बिना पुण्य पाप के सुख दुःख होने से परमेश्वर पर दोष आता है। दूसरा जैसे बिना किये कर्मों के सुख दुःख मिलते हैं तो आगे नरक स्वर्ग भी न होना चाहिये। क्योंकि जैसे परमेश्वर ने इस समय बिना कर्मों के सुख दुःख दिया है वैसे मरे पीछे भी जिस को चाहेगा उस को स्वर्ग में और जिस को चाहे नरक में भेज देगा। पुनः सब जीव अधर्मयुक्त हो जायेंगे, धर्म क्यों करें ? क्योंकि धर्म का फल मिलने में सन्देह है। परमेश्वर के हाथ है, जैसे उस की प्रसन्नता होगी वैसा करेगा तो पापकर्मों में भय न होकर संसार में पाप की वृद्धि और धर्म का क्षय हो जायेगा।...."

९. "....मूल– कइया होही दिवसो, जइया सुगुरूण पायमूलम्मि।
उस्सुत्त लेस विसलव, रहिओ निसुणेसु जिण धम्मं।। –प्रकरण भाग २। षष्टी०सू० १२८।।

सं0अर्थ–जो मनुष्य जिनागम अर्थात् जैनों के शास्त्रें को सुनूंगा, उत्सूत्र अर्थात् अन्य मत के ग्रन्थों को कभी न सुनूंगा। इतनी इच्छा करे वह इतनी इच्छामात्र ही से दुःखसागर से तर जाता है।।

(समीक्षक) यह भी बात भोले मनुष्यों को फंसाने के लिए है। क्योंकि इस पूर्वोक्त इच्छा से यहां के दुःखसागर से भी नहीं तरता और पूर्वजन्म के भी संचित पापों के दुःखरूपी फल भोगे बिना नहीं छूट सकता। जो ऐसी–ऐसी झूठ अर्थात् विद्याविरुद्ध बातें न लिखते तो इन के अविद्यारूप ग्रन्थों को वेदादि शास्त्र देख सुन सत्याऽसत्य जान कर इनके पोकल ग्रन्थों को छोड़ देते। परन्तु ऐसा जकड़ कर इन अविद्वानों को बांधा है कि इस जाल से कोई एक बुद्धिमान् सत्संगी चाहें छूट सके तो सम्भव है परन्तु अन्य जड़बुद्धियों का छूटना तो अति कठिन है।"

10. "–देखो ! लोग एक अर्धांगी को जो खटोले पर पड़ा था उस पास लाये और यीशु ने उनका विश्वास देख के उस अर्धांगी से कहा हे पुत्र ! ढाढस कर, तेरे पाप क्षमा किये गये हैं।। मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को पश्चात्ताप के लिये बुलाने आया हूँ।। –इं० म० प० ६। आ० २। १३।।

(समीक्षक) यह भी बात वैसी ही असम्भव है जैसी पूर्व लिख आये हैं और **जो पाप क्षमा करने की बात है वह केवल भोले लोगों को प्रलोभन देकर फंसाना है।** जैसे दूसरे के पिये मद्य, भांग अफीम खाये का नशा दूसरे को नहीं प्राप्त हो सकता वैसे ही किसी का किया हुआ पाप किसी के पास नहीं जाता किन्तु जो करता है वही भोगता है, यही ईश्वर का न्याय है। यदि दूसरे का किया पाप–पुण्य दूसरे को प्राप्त होवे अथवा न्यायाधीश स्वयं ले लेवें वा कर्त्ताओं ही को यथायोग्य फल ईश्वर न देवे तो वह अन्यायकारी हो जावे। देखो ! धर्म ही कल्याणकारक है; ईसा वा अन्य कोई नहीं। और धर्मात्माओं के लिये ईसा की कुछ आवश्यकता भी नहीं और न पापियों के लिये क्योंकि पाप किसी का नहीं छूट सकता।।७३।।"

११. "..–आत्मा कहता है हां कि वे अपने परिश्रम से विश्राम करेंगे परन्तु उनके कार्य्य उनके संग हो लेते हैं।। –यो० प्र० प० १४। आ० १३।।

(समीक्षक) देखिये ! ईसाइयों का ईश्वर तो कहता है उनके कर्म उन के संग रहेंगे अर्थात् कर्मानुसार फल सब को दिये जायेंगे और ये लोग कहते हैं कि ईसा पापों को ले लेगा और क्षमा भी किये जायेंगे। यहां **बुद्धिमान् विचारें कि ईश्वर का वचन सच्चा वा ईसाइयों का** ?एक बात में दोनों तो सच्चे हो ही नहीं सकते। इनमें से एक झूठा अवश्य होगा। हम को क्या ! चाहे ईसाइयों का ईश्वर झूठा हो वा ईसाई लोग।।१२२।।"

१२. "–देख ! मैं शीघ्र आता हूँ और मेरा प्रतिफल मेरे साथ है जिससे हर एक को **जैसा उसका कार्य ठहरेगा वैसा फल देऊंगा।।** –यो० प्र० प० २२। आ० १२।।

(समीक्षक) **जब यही बात है कि कर्मानुसार फल पाते हैं तो पापों की क्षमा कभी नहीं होती और जो क्षमा होती है तो इञ्जील की बातें झूठीं।** यदि कोई कहे कि क्षमा करना भी इञ्जील में लिखा है तो पूर्वापर विरुद्ध अर्थात् 'हल्फदरोगी' हुई तो झूठ है। इसका मानना छोड़ देओ। अब कहाँ तक लिखें इनकी बाइबल में लाखों बातें खण्डनीय हैं। यह तो थोड़ा सा चिह्न मात्र ईसाइयों की बाइबल पुस्तक का दिखलाया है। इतने ही से बुद्धिमान् लोग बहुत समझ लेंगे। थोड़ी सी बातों को छोड़ शेष सब झूठ भरा है। जैसे झूठ के संग से सत्य भी शुद्ध नहीं रहता वैसा ही बाइबल पुस्तक भी माननीय नहीं हो सकता किन्तु वह सत्य तो वेदों के स्वीकार में गृहीत होता ही है।।१३३।।"

बिना लाग लपेट के, बिना लोगों की नाराजगी की चिंता किए, भूत, वर्तमान और भविष्य का चिंतन कर सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय सत्य सिद्धान्त को निभ्रांत रूप में सामने रखने वाले और मतप्रवर्तकों के फैलाए जा रहे भ्रम का भंजन करने वाले विरले पुरुष है मेरे देव महर्षि दयानन्द सरस्वती।

जब तक मानव कर्म के अटल फल का सिद्धान्त नहीं मानेगा, तब तक यह दुनिया नरक बनी रहेगी।

ओ३म्

स्वाध्याय

अथ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका

—पं0रामनारायण जी शास्त्री, विद्यावारिधि

(पाठकों को स्मरण होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के इस मुखपुत्र का आर.एन.आई. में पंजीकरण से पूर्व "ऋषि स्मृति प्रकाश" नाम था। "ऋषि स्मृति प्रकाश" के सितम्बर २०१४ से जुलाई २०१५ तक ग्यारह अंकों में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को स्वाध्याय रूप में न्यास के सदस्य पं0 श्री रामनाराण जी शास्त्री ने प्रस्तुत करना आरंभ किया था। वैयक्तिक व पारिवारिक व्यस्तता से यह क्रम टूट गया था। जब से इस मुखपत्र के संपादन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ, मैं पण्डित जी से इसे जारी रखने के अनुरोध करता रहा हूँ। समय हो और पंडित जी प्रार्थना स्वीकार न करे, यह असंभव ही है। इस अंक से यह स्वाध्याय नये सिरे से आरंभ किया जा रहा है। हमें प्रसन्नता है कि अब यह लेख पंडित जी "विद्यावारिधि" बनकर प्रस्तुत कर रहे हैं। पण्डित जी का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए यह धारावाहिक स्वाध्याय आरंभ करते हैं। –संपादक)

महर्षि दयानंद सरस्वती के महनीय ग्रंथ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर किसी प्रकार की कोई टीका टिप्पणी करने का हमारा कोई अधिकार, मंतव्य अथवा योग्यता नहीं है। हाँ इतना अवश्य है कि इस बहाने से हम स्वयं ऋषि के ग्रंथ का स्वाध्याय करते हुए "महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश" के सुधी पाठकों तक इन ग्रंथों को सरलता से पहुँचाना चाहते हैं। "प्रत्येक व्यक्ति ग्रंथ क्रय करके पढ़ने में विश्वास नहीं रखता, परंतु अनेक प्रकार की जीवनोपयोगी सामग्री एकत्र उपलब्ध होने के कारण पत्र का ग्राहक बनना स्वीकार कर लेता है" इसी तथ्य को ध्यान में रखकर हमने ऋषित ग्रंथों को पाठकों तक पहुँचाने का निश्चय किया; जिसमें ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का प्रथमतः स्वाध्याय हेतु चयन किया है। हम न्यास के अधिकारी तथा पत्र के व्यवस्थापक/संपादक के आभारी हैं कि आपने हमारे इस स्तंभ को अपने मुखपत्र में सहज भाव से स्थान दिया।

महर्षि स्वामी दयानंद ने जब प्राचीन ऋषि मुनियों की परंपरा के अनुसार उनके द्वारा स्वीत तथा अनुमोदित वैदिक मंतव्यों का प्रचार प्रसार आरंभ किया, तो उन्हें प्रतिपद इस बात का ज्ञान हुआ कि जब तक मैं चारों वेदों का प्राचीन ऋषिमुनियों से सम्मत यथार्थ भाष्य न बनाऊंगा, तब तक मैं अपने मूल उद्देश्य में सफल नहीं हो सकूंगा। क्योंकि उस समय पौर्वात्य–पाश्चात्य, भारतीय अथवा विदेशी प्रत्येक विद्वान ऋषि दयानंद सरस्वती द्वारा प्रसारित मंतव्यों का खंडन करने के लिए सायण–महीधर त वेदभाष्यों का ही सहारा लेता था। सायण महीधर आदि के भाष्य ऐसे दूषित है जिनसे न केवल वेद ही दूषित होते हैं अपितु वैदिक धर्म संगति–सभ्यता और वैदिक वाङ्मय सारा ही कलंकित होता है। इसलिए महर्षि दयानंद सरस्वती को सायण–महीधर आदि के भाष्यों की आलोचना और प्राचीन ऋषि मुनि सम्मत सिद्धांतों की प्रामाणिकता दर्शाने के लिए प्राचीन ऋषि–मुनियों द्वारा प्रोक्त शाखा–ब्राह्मण–आरण्यक–उपनिषद तथा अन्य वैदिक वाङ्मय के आधार पर वेद के वास्तविक स्वरूप का बोध कराने वाले भाष्य की रचना आवश्यक प्रतीत

हुई। इस कार्य के लिए उन्होंने सब से पूर्व चारों वेदों का गंभीर अनुशीलन किया। इस अनुशीलन से चारों वेदों के संबंध में उन्हें जो ज्ञान उपलब्ध हुआ, उसे उन्होंने चतुर्वेद विषयानुक्रम (चारों वेदों की विषयसूची) के रूप में संकलित किया।

महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ने भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रतिपदा विक्रमी संवत १६३३ (20 अगस्त 1876) से वेद भाष्य को नियमित रूप से लिखना प्रारंभ किया, और साक्षात् वेद भाष्य बनाने से पूर्व वेद और उसके भाष्य के संबंध में जो आवश्यक जानकारी देना आपेक्षित था, उसके लिए रिसीवर ने प्रथम "ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका" नामक भूमिका लिखनी प्रारंभ की। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की महत्ता को ध्यान में रखकर महर्षि दयानंद सरस्वती ने इसमें कई बार परिवर्धन वा परिष्करण किए। परोपकारिणी सभा के संग्रह में इस भूमिका के ६ (छह) हस्तलेख विद्यमान है, जो उत्तरोत्तर परिष्करण तथा परिवर्धन के प्रमाण है।

महर्षि दयानंद सरस्वती के ग्रंथों में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का सर्वाधिक महत्त्व है, क्योंकि इस ग्रंथ में स्वामी जी महाराज ने वेद के उन महत्वपूर्ण सिद्धांतों और वेदार्थ की प्रक्रिया की व्याख्या की है ,जिस पर महर्षि दयानंदत वेद भाष्य आधृत है। इतना ही नहीं, वेद के प्राचीन व्याख्यान रूप ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद के तत्वों को यथार्थ रूप में समझने का भी यही एकमात्र साधन है।

महर्षि दयानंद सरस्वती इस बात को भली प्रकार जानते थे कि जो व्यक्ति मेरे बनाए "ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका" नामक ग्रंथ को नहीं पढ़ेगा, वह मेरे भाष्य को कभी नहीं समझ सकेगा। इसलिए उन्होंने ऋग्वेद और यजुर्वेद के भाष्यों के पाँचवे अंक के आवरण पत्र के पृष्ठ ३४ पर जो विज्ञापन छपवाया था, उसमें स्पष्ट लिखा है – जो कोई भूमिका के बिना केवल वेद ही लिया चाहे तो नहीं मिल सकते, किंतु भूमिका ५) देने से पृथक मिल सकती है। (ऋषि दयानंद के पत्र और विज्ञापन तृतीय संस्करण भाग १ पृष्ठ २५६ पर)

महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने इस महत्वपूर्ण ग्रंथ "ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका" को ३५ (पैंतीस) विषय या प्रकरणों में विभक्त करके लिखा है; जिसमें ईश्वर प्रार्थना विषय प्रथम है, इसी के अंतर्गत ग्रंथरचना का प्रयोजन भी स्वामी जी महाराज ने स्पष्ट किया है। यह ग्रंथ मूल रूप में ही संस्त और हिंदी (आर्यभाषा) दोनों में लिखा गया है जैसा कि ग्रंथ के प्रारंभिक पंचम पद्य से ही स्पष्ट है।

सर्वप्रथम ऋषिवर ने तैत्तिरीयारण्यक का वाक्य उद्धृत किया है उसके बाद ईश्वर प्रार्थना और ग्रंथलेखन उद्देश्य से संबद्ध स्वरचित आठ पद्य लिखे हैं; साथ ही इन सब का एक साथ भाषार्थ के रूप में भारती (भारत की भाषा हिंदी) में अर्थ भी लिखा है।

ओ३म् सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।। ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः।।

वह सच्चिदानंदस्वरुप सर्वरक्षक सर्वान्तर्यामी परमपिता परमेश्वर, जिसका मुख्य और निज नाम "ओम्" है, हम दोनों की (गुरु और शिष्य की, लेखक और पाठक की, वक्ता और श्रोता की) एक साथ रक्षा करे हमारा पालन पोषण करे और हम दोनों भी मिलकर परस्पर एक दूसरे की रक्षा करें तथा पालन पोषण करें। साथ मिलकर ही हम दोनों सर्वविध (शारीरिक, बौद्धिक,

मानसिक तथा आत्मिक आदि) शक्ति से संपन्न बनें। हमारा अधीत विषय तेजस्वी हो अर्थात् हमारे जीवन को तेजपूर्ण बनाने वाला, प्रकाशित करने वाला होवे। हम परस्पर कभी किसी भी परिस्थिति में एक दूसरे से द्वेश न करें। हमें इस प्रकार से शांति प्राप्त हो, हमारा जीवन सर्वदा शांतिसम्पन्न बना रहे। महर्षि दयानंद सरस्वती का लिखा भाषार्थ भी हम जैसा का तैसा ही उद्धृत कर रहे हैं। भाषार्थः – (सहनाव0) हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर! आपकी पा, रक्षा और सहाय से हम लोग परस्पर एक दूसरे की रक्षा करें। (सहनौ भु0) और हम सब लोग परमप्रीति से मिलके सबसे उत्तम ऐश्वर्य अर्थात चक्रवर्तीराज्य आदि सामग्री से आनंद को आपके अनुग्रह से सदा भोगें। (तेजस्वि0) और हे प्रकाशमय सब विद्या के देनेवाले परमेश्वर! आपके सामर्थ्य से हम लोगों का पढ़ा और पढ़ाया सब संसार में प्रकाश को प्राप्त हो और हमारी विद्या सदा बढ़ती रहे।(मा विद्विषा0) हे प्रीति के उत्पादक! आप ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे हम लोग परस्पर विरोध कभी ना करें, किंतु एक दूसरे के मित्र होकर सदा बर्तें। (ओं शांति0 हे भगवान्! आपकी करुणा से हम लोगों के तीन ताप–एक "आध्यात्मिक" जो कि ज्वर आदि रोगों से शरीर में पीड़ा होती है, दूसरा "आधिभौतिक" जो दूसरे प्राणियों से (दुख) होता है और तीसरा "आधिदैविक" जो कि मन और इंद्रियों के विकार अशुद्धि और चंचलता से क्लेश होता है, इन तीनों तापों को आप शान्त अर्थात् निवारण कर दीजिए। जिससे हम लोग सुख से इस वेदभाष्य को यथावत् बनाके सब मनुष्यों का उपकार करें। यही आपसे चाहते हैं, सो कृपा करके हम लोगों को सब दिनों के लिए सहाय कीजिए।।

(क्रमशः)

अपाहिज व बेसहारा गौधन की रक्षार्थ जोधपुर की प्राचीनतम

महर्षि दयानन्द गौशाला,मण्डोर

—आर्यसमाज जोधपुर रातानाड़ा के अन्तर्गत

यह गौशाला जोधपुर की 105 वर्ष पुरानी गौशाला है इसमें गायों की देखभाल उचित ढंग से की जाती है आप भी अपना समय एवं दान देकर पुण्य के भागीदार बन सकते हैं । अतः आप द्वारा दिया गया दान 80जी के तहत छूट प्राप्त है । आप एवं अपने सहयोगियों से गौशाला में दान देकर 80जी की छूट प्राप्त कर लाभ प्राप्त कर पुण्य के भागीदार बन सकते हैं ।

U Co Bank A/c 05630110041192
मण्डोर ब्रांच IFSC UCBA0000563

सचिव

दुर्गादास वैदिक

गतांक से आगे

आर्यसमाज का इतिहास

ऐहिक जीवन का अन्तिम दृश्य

(गतांक में पढ़ा कि शत्रुओं के षड्यंत्र से जोधपुर में विष दिए जाने के बाद भी अनुपम क्षमादानी महर्षि ने विषदाता रसोइए जगन्नाथ को धन देकर नेपाल भगाया। आगे पढ़े-)

स्वामी जी की बीमारी का वृतान्त बहुत दिनों तक छिपा न रहा। अजमेर में समाचार पहुंचने ही आर्यपुरुष जोधपुर के लिए रवाना हुए और स्वामी जी की दशा देखकर आश्चर्यचकित हुए। **रोग की दशा, इलाज की शिथिलता और सेवा की असुविधा देखकर** आर्यपुरुषों ने ऋषि से आग्रह किया कि आप आबू पहाड़ पर चलें। ऋषि ने स्वीकार कर लिया। महाराज को सूचना मिलने पर पहले तो वे बहुत दु:खित हुए परन्तु फिर स्वामी जी का आग्रह देखकर खिन्न मन से आदरपूर्वक विदाई का प्रबन्ध कर दिया। विदाई के समय स्वयं उपस्थित होकर रास्ते के आराम का भली प्रकार प्रबन्ध कर दिया। जोधपुर से डोली में स्वामी जी आबू पर्वत पर गए, परन्तु वहाँ भी कोई विशेष आराम दिखाई नहीं दिया। तब स्वामी जी के शिष्य उन्हें अजमेर वापिस ले गए। इस यात्रा में उन्हें बहुत शारीरिक कष्ट हुआ परन्तु अच्छा इलाज करने और स्वयं सेवा करने की शिष्यों की प्रबल इच्छा में बाधा डालना उन्होंने उचित न समझा। अजमेर में स्वामी जी को एक कोठी में ठहराया गया और डॉ० लक्ष्मणदास जी का इलाज प्रारम्भ हुआ।

ऋषि का मृत्यु समय निकट आ रहा था। इलाज और सेवा कुछ परिवर्तन पैदा न कर सके। अन्तिम समय का दृश्य एक दर्शक की लेखनी ने जिन सरल भावों में चित्रित किया है, हम उससे उत्तम वर्णन नहीं कर सकते , इस कारण उसी को उद्धृत करते हैं:-

''रेल से उतार कर स्वामी जी को पालकी में लिटा दिया गया और सावधानी से उन्हें एक कोठी में ले गए, जो पहले से इस काम के लिए नियत कर रखी थी। उस समय रात के तीन बजे थे। अक्तूबर का अन्त था, लोगो को सर्दी मालूम देती थी परन्तु स्वामी जी के मुहं से 'गर्मी-गर्मी' का शब्द निकलता था। कोठी के सब दरवाजे खुलवा दिए गए तब भी स्वामी जी को शान्ति न हुई। दूसरे दिन डॉ० लक्ष्मणदास जी का इलाज शुरू हुआ, पर उनकी दशा में कुछ अन्तर न हुआ। एक बार स्वामी जी ने अपने मनुष्यों से कहा कि हमको मसूदा ले चलो, इस पर सब ने कहा कि आराम होने पर हम आपकों वहाँ पहुँचा देंगे, इस दशा में बार-बार यात्रा करना उचित नहीं है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि 'दो दिन में हमको पूरा आराम पड़ जाएगा।' यह उत्तर स्मरण रखने योग्य हैं। अब स्वामी जी के सारे शरीर में छाले-ही-छाले दिखने लगे। २९ अक्तूबर को स्वामी जी का शरीर अत्यन्त ही निर्बल हो गया। अपने सेवकों से कहा कि हमें बिठा दो। जब बिठाया गया तो कहा कि छोड़ दो, हमें सहारे की आवश्यकता नहीं है। सो कितनी देर तक बिना सहारे के बैठे रहे। उस समय सांस जल्दी-जल्दी चल रहा था पर स्वामी जी उसे रोक कर बल से बाहर फेंक देते थे और ईश्वर के ध्यान में मग्न हो रहे थे। रात को कष्ट अधिक रहा। दूसरे दिन ३० अक्टूबर को डॉक्टर न्यूमन साहब बुलाए गए। जिस समय उक्त डाक्टर साहब ने स्वामी जी को देखा तो बड़े आश्चर्य से कहने लगे कि 'धन्य है इस सत्पुरूष को , हमने आज तक ऐसा दिल का मजबूत कोई दूसरा मनुष्य नहीं देखा कि जिसको इस प्रकार

नख से सिर तक पीड़ा हो और वह तनिक भी आह या ऊह न करे।' उस समय स्वामी जी के कण्ठ में कफ की बड़ी प्रबलता थी, जिसकी निवृत्ति के लिए डाक्टर न्यूमन ने कई उपाय किए, परन्तु उनसे कुछ लाभ न हुआ। ११ बजे दिन के स्वामी जी का श्वास बढ़ने लगा और कहा कि हम शौच जाएंगे। उस समय स्वामी जी को चार आदमियों ने उठाया और शौच करने की चौकी पर बिठा दिया। शौच गए, और आप पानी लिया। हाथ धोये, दातुन की और कहा कि अब हमको पलंग पर ले चलो। आज्ञानुसार पलंग पर ला बिठाया। कुछ देर बैठकर फिर लेट गए । श्वास बड़े वेग से चलता था और ऐसा प्रतीत होता था कि स्वामी जी श्वास को रोककर ईश्वर का ध्यान करते हैं। उस समय स्वामी जी से पूछा गया - " महाराज, कहिए, अब आप की तबीयत कैसी है ?"

कहने लगे-" अच्छी है, एक मास के पीछे आज का दिन आराम का है।"

"इस समय लाला जीवनदास जी ने , जो लाहौर से स्वामी जी को देखने अजमेर गए थे, स्वामी जी से अभिमुख होकर पूछा कि महाराज, " इस समय कहाँ है ?"

स्वामी जी ने उत्तर दिया- "ईश्वरेच्छा में।"

"उस समय श्रीयुत के मुख पर किसी प्रकार का शोक या घबराहट प्रतीत नहीं होती थी। ऐसी वीरता के साथ दु:ख को सहन करते थे कि मुँह से कभी आह या शोक नहीं निकला। इसी प्रकार स्वामी जी को बातचीत करते-करते पांच बज गए और बड़ी सावधानता से रहे। इस समय हम लोगों ने श्रीयुत से पूछा कि कहिये , अब आपकी तबीयत कैसी है ? तो कहने लगे -" अच्छा है, तेज और अन्धकार का भाव है"।

इस बात को हम कुछ न समझ सके क्योंकि स्वामी जी इस समय सरल बातचीत कर रहे थे। साढ़े पांच बजे का समय आया तो हम लोगों से स्वामी जी ने कहा कि अब सब आर्यजनों को, हमारे साथ और दूर-दूर देशों से आये हैं, बुला लो और हमारे पीछे खडा कर दो। कोई सम्मुख खड़ा न हो , बस आज्ञा पानी थी, वही किया गया ।

" जब सब लोग स्वामी जी के पास आ गए तब श्रीयुत ने कहा कि चारों ओर के द्वार खोल दो और ऊपर की छत के दो छोटे-छोटे द्वार भी खुलवा दिये। इस समय पाण्डया विष्णुलाल मोहनलाल भी श्रीमान् उदयपुराधीश की आज्ञानुसार आ गए। फिर स्वामी जी ने पूछा कौन-सा पक्ष है, क्या तिथि और क्या वार है ? किसी ने उत्तर दिया कि कृष्ण पक्ष और शुक्लपक्ष की सन्धि अमावस मंगलवार है। यह सुनकर कोठी की छत और दीवारों की ओर दृष्टि करके, फिर पहले वेदमन्त्र पढ़े, तत्पश्चात् संस्कृत में ईश्वर की कुछ उपासना की, फिर भाषा में ईश्वर के गुणों का थोड़ा-सा कथन कर बड़ी प्रसन्नता और हर्ष सहित गायत्री मन्त्र का पाठ करने लगे , तत्पश्चात् हर्ष और प्रफुल्लित चित्त सहित कुछ देर तक समाधियुक्त नयन खोल यों कहने लगे- " हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर ! तेरी इच्छा पूर्ण हो । अहा ! तैने अच्छी लीला की !" बस इतना कह स्वामी जी महाराज ने जो सीधे लेट रहे थे, स्वयं करवट ली और एक प्रकार से श्वास को रोककर एक बार ही निकाल दिया।" (आर्यधर्मेन्द्र जीवन)

लेखक के शब्द सरल और अकृत्रिम हैं। ये शब्द बताते हैं कि दर्शकों के हृदयों पर उस तपस्वी की मृत्यु का गहरा असर हुआ। कहते हैं कि लाहौर के पं. गुरुदत्त विद्यार्थी भी लाला जीवनदास जी के साथ

ऋषि के दर्शनों को गए हुए थे। पं. गुरुदत्त जी इससे पूर्व अर्धनास्तिक थे। विज्ञान के धक्के ने हृदय के ईश्वर-विश्वास को हिला दिया था। ऋषि की मृत्यु के दिव्य दृश्य को देखकर पण्डित जी के कोमल हृदय पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। एक आस्तिक किस शान्ति से मर सकता है, यह देखकर गुरुदत्त का हृदय पिघल गया और जहां नास्तिकता के कारण शून्य हो रहा था वहां विश्वास और श्रद्धा का सुगन्धित पवन बहने लगा। जो अविश्वासी हृदय के साथ मरता है, उसे भविष्य में निराशा दिखाई देती है। जिसे ईश्वर पर भरोसा नहीं, उसके लिए मौत एक अथाह अंधेरी खाई है। जिसने जीवन में केवल आस्तिकता का दम्भ भरा हो, मृत्यु के समय उसके मुंह पर से पर्दा उठ आता है और जो प्रत्यक्ष में संतुष्ट दिखाई देता था, वह असलियत में अशान्तिमय दिखाई देता है। मृत्युकाल सब पर्दों को उघाड़ देता है। उस समय कोई भाव छुपा नहीं रहता। ऋषि का जीवन उज्जवल था, परन्तु मृत्यु उससे भी बढ़ कर थी। वह दिव्य थी। इस भूगोलपर ऐसे दृश्य कम दिखाई देते हैं। वह ऐसी मृत्यु थी जो नास्तिक हृदय के मरुस्थल में से भी आस्तिकता की सरस्वती को बहा सकती थी।

जीवन के समय ऋषि के मित्र भी थे और शत्रु भी थे; परन्तु मृत्यु ने उन सब भेदों को दूर कर दिया। देश में मृत्यु का समाचार फैलते ही एक ऐसा सार्वजनिक सहानुभूति का शब्द उठा कि छोटे-छोटे विक्षोभ दूर हो गए। ईसाई, मुसलमान, ब्राह्मण, थ्योसाफिस्ट सभी ने एक स्वर से आर्यजाति के नेता की मृत्यु पर दुःख प्रकाशित किया। जीते जी जो संकोचवश मौन रहते थे, वह खुल उठे और भारत के नेताओं और समाचार पत्रों ने दयानन्द की अकाल मृत्यु को देश का दुर्भाग्य का चिह्न समझा। सभी प्रकार के भारत हितैषी सज्जनों ने, ऋषि की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। आर्यसमाज को कितना कष्ट हुआ होगा, इसकी तो कल्पना ही की जा सकती है। आर्यसमाज का सर्वस्व लुट गया। उसका मूलाधार नष्ट हो गया। समाजे अनाथ हो गई। उस समय समाजों की अनाथ दशा थी, उसकी कल्पना इस समय करना कठिन है। अब तो आर्य प्रतिनिधि सभाएं है, दर्जनों विद्वान् हैं, पुराने-पुराने विश्वासपात्र नेता हैं और एक के खाली स्थान पर बैठने वाला दूसरा महानुभाव विद्यमान हैं। उस समय आर्यसमाज और आर्यसमाजियों को एक दयानन्द का भरोसा था। कोई झगड़ा हो तो वही निपटायें, शास्त्रार्थ हो तो वहीं पहुँचे, उत्सव की शोभा उन्हीं से हो- सारांश यह कि समाज का सर्वस्व केवल वही थे। आर्यसमाज में जो व्यापी मातम की घटा छा गई, वह यथार्थ ही थी।

आर्यसमाज के बाहर समझदार हिन्दुओं ने स्वामी जी के वियोग को किस प्रकार अनुभव किया, उसका दिग्दर्शन पं. बालकृष्ण भट्ट द्वारा संपादित, प्रयाग के 'हिन्दी प्रदीप' के लम्बे लेख की निम्नलिखित पंक्तियों से हो सकता है। स्वामी जी की मृत्यु का समाचार सुनकर भट्ट ने लिखा था, "हा! आज भारतोन्नति-कमलिनी का सूर्य अस्त हो गया! हा! वेद का खेद मिटाने वाला सद्वैद्य लुप्त हो गया। हा दयानन्द सरस्वती! आर्यों के सरस्वती जहाज की पतवार बिना दूसरे को सौंपे तुम क्यों अन्तर्धान हो गए! हा! सच्ची दया के समुद्र! हा! सच्चे आनंद के वारिद! अपनी विद्यामयी लहरी और हितोपदेश रूपी धारा से परितृप्त भारतभूमि को आर्द्र कर कहाँ चले गए? हा! चार दिन के चतुरानन! इस असभ्यताप्रिय मण्डली में आपने अपनी विलक्षण चतुराई को क्यों इस प्रकार सरल भाव से फैलाया?" इसी प्रकार लम्बा खेदपूर्ण लेख लिख कर भट्ट जी ने यह प्रकाशित कर दिया कि जो जन आर्यसमाज के सभासद् नहीं परन्तु आर्यत्व से प्रेम

करते थे, वह दयानन्द को आर्यजाति के नेता समझते थे, संकुचित मत का प्रचारक नहीं।

मुसलमान दुनिया के विचारों का प्रतिबिम्ब उस समय के भारतीय मुसलमानों के नेता सर सैयद अहमद खां की राय में दिखाई दे सकता है। लाहौर के 'कोहेनूर' में आपने लिखा था, 'निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहिब ने जो संस्कृत के बहुत बड़े आलिम और वेद के बहुत बड़े मुहक्किक थे, ३० वीं अक्टूबर १८८३ को ७ बजे शाम के अजमेर में इंतकाल किया। इलावा इलम औ फजल के निहायत नेक और दरवेश सिफ्त आदमी थे। इनके मुतअक्कद इनको देवता मानते थे, और बेशक वह इसी लायक थे वह सिर्फ ज्योतिस्वरुप निरंकार के सिवा दूसरे की पूजा जायज नहीं रखते थे। हमसे और स्वामी दयानन्द मरहूम से बहुत मुलाकात थी। हम हमेशा इनका हियत अदब करते थे। क्योंकि ऐसे आलम और उम्दा शख्स थे कि हरेक मजहबवाले को इनका अदब लाजिम था। बहरहाल ऐसे शख्स थे, जिनका मसल इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं हैं, और हरेक शख्स को उनकी वफात का गम करना लाजिम है, कि ऐसा बेनजीर शख्स इनके दर्मियान से जाता रहा।" इस सम्मति को समझदार मुसलमानों की सम्मति का एक नमूना समझा जा सकता है।

अन्तिम दिनों में स्वामी जी का थ्योसोफिस्टों से बहुत मतभेद हो गया था, परन्तु मृत्यु पर थ्योसोफिकल सोसाइटी के नेताओं ने बड़ी सहृदयता से दु:ख प्रकट करते हुए आन्तरिक भक्ति का प्रमाण दिया। स्वामीजी की मृत्यु के समाचार पर "थ्यासोफिस्ट" ने हृदय के उद्‌गार निम्नलिखित शब्दों में प्रकट किये थे, "एक महान् आत्मा भारतवर्ष से चल बसी। पं. दयानन्द सरस्वती, जिन्होंने आर्यावर्त में आर्यसमाज की बुनियाद रखी थी, और इसके सबसे बड़े रुकन वा मुखिया थे, आज दुनिया से कूच कर गए। वह निडर और सरगर्मी से काम करने वाला रिफार्मर जिसकी जबर्दस्त आवाज और पुरजोश वक्तृव्य शक्ति से भारत के हजारों आदमी गत कई वर्षों के समय में प्रभाव और आलस्य के गढ़े से निकल कर देशभक्ति के झण्डे तले आ गए थे, आज भारत को वियोग से दु:खी करके स्वर्ग को चले गए।"

थ्यासोफिकल सोसाइटी के संस्थापक कर्नल अल्काट ने लिखा- "स्वामी जी महाराज नि:सन्देह एक महान पुरुष और संस्कृत के बड़े विद्वान् थे। उनमें ऊंचे दरजे की योग्यता, दृढ़ निश्चय और आत्मिक विश्वास का निवास था। वह मनुष्य जाति के मार्गदर्शक थे। वह अत्यन्त सुडौल, दीर्घाकार, अत्यन्त मधुर स्वभाव और हमारे साथ व्यवहार में दयाशील थे। हमारे दिमाग पर उन्होंने बड़ा गहरा असर छोड़ा है।"

ईसाई लोगों से स्वामीजी का बहुत खिंचाव रहता था क्योंकि ईसाइयत की विजययात्रा को उत्तरीय भारत में रोकने वाला दयानन्द ही था। मृत्यु पर ईसाईयों की ओर से भी हार्दिक दु:ख प्रकाशित किया गया। विलायत में समाचार पहुंचा तो संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर मैक्समूलर ने "पालमाल गजट" में एक लेख लिखा। उस लेख में प्रोफेसर महोदय ने स्वीकार किया कि स्वामी जी वैदिक साहित्य के बड़े भारी पण्डित और प्रसिद्ध सुधारक थे। प्रोफेसर साहिब ने लिखा कि जहां कहीं भी शास्त्रार्थ हुआ, स्वामी दयानन्द का ही विजय हुआ।

देश के सभी समाचारपत्रों ने ऋषि की मृत्यु को देश का परम दुर्भाग्य बतलाया। इस प्रकार देशभर द्वारा कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किए हुए ऋषि दयानन्द ने दीवाली की रात को अभागी भारत भूमि को छोड़कर

-: पंचम प्रसून:-

ऋषिगाथा (महाकाव्य)

(वैराग्यरथ पर सवार शुद्ध चैतन्य समृद्ध योगमार्ग की खोज में सिद्धपुर की ओर प्रस्थान करते हैं। आगे का वृत्तांत कवि के शब्दों में पढ़े-----स.)

सिद्धपुर पथ

चल पड़ा सायला तज कर, यह कोट कांगड़ा आया।
धर वेष ब्रह्मचारी का, ढूंड़ा, गुरु खोज न पाया।।१।।

जग पथ पर इष्ट सदा ही, दुर्लभ बन जाया करता।
प्रिय दर्शन पहिले प्राणी, बहु कष्ट उठाया करता ।।२।।

देखे दलबल संतों के, बहु साधु मंडली वाले।
कुछ जटाजूट देखे थे, कुछ चेला चेली वाले ।।३।।

कुछ फैला कर निज माया, हरिनाम बताते जाते।
कुछ संत, कही वैरागी, मुंडित मस्तक दिखलाते ।।४।।

कुछ साधु महंत कहाकर, भरते मनमानी झोली।
फंसती इनकी दल-दल में, प्राय: वनितायें भोली ।।५।।

यह वटु कटु अनुभव पाकर, अन्तस्थल में चकराया।
क्या ऐसे साधक होते, क्या ऐसी इनकी माया।।६।।

जो बने साधु संन्यासी, वर्णों की नैया खेते।
क्यों वे ही पाप भंवर बन, बहते संसार डुबोते।।७।।

तज कोटकांगड़ा इसने, कर दी अगली तैयारी।
बिसरा कर पीतपटों को, होकर श्वेताम्बर धारी।।८।।

था ज्ञात सिद्धपुर मेला, होगा, साधक आयेंगे।
संभव गुरूवर दर्शन कर, मन भाव पनप जायेंगे।।९।।

जाता था, पगडंडी पर, कोई निज परिचित पाया।
कौतूहल मय बन देखा, वाणी ने छल बरसाया।।१०।।

मानव को भाव छिपाने, बहु वेष बनाने पड़ते।
परिचित जन टकराने पर, मन मन्त्र भुलाने पड़ते।।११।।

बोला परिचित—वटु बनकर, क्यों वन-वन ठुकराते हो।
पल जहाँ युवापन देखा, वह घर त्यागे जाते हो।।१२।।

घर सब साधन संयुत है, वंशों की मर्यादा है।
प्रिय शंकर! सत्य बताना; तुमको कोई बाधा है? ।।१३।।

परिचित क्या बाधा होती, मुझको विश्राम कहाँ है।
शिव अन्वेषण में रत हूं, उस का वर धाम कहां है।।१४।।

कुछ जंगल पद गत कीन्हे, इस उस पथ आता जाता।
मन मेरा जग अघ तज कर, पावन संसार बसाता।।१५।।

घर कोई गिरिवर होगा, होगा प्रभु सहचर मेरा।
यम तारों से खेलूंगा, कर योग समाधि वसेरा।।१६।।

परिचित ने शुभ अभिलाषा, भोले शंकर की जानी ।
यौवन सर में लहराती, वैराग्य लहर पहचानी।।१७

जाना कितना साहस है, अपना पथा बतलाता है।
है लघु दीपक पर झंझा, झोंखों में मुस्काता है।।१८।।

मन में विश्वास अपरिमित, तन में पूरित यौवन बल।
संसार काल सर जाने, बाधा अन्वेषण संबल।।१९।।

कह दिया हृदय परिचित ने, तेरा पथ मंगलमय हो।
जग की मोहक माया से, शंकर! तू सदा अभय हो।।२०।।

दोनों पंथी पथ चलते, मेले में आ पंहुचे थे।
दोनों ही पथिक लक्ष्य को, पाने सन्नद्ध खड़े थे।।२१।।

आर्यसमाज हिरणमगरी उदयपुर

आर्यसमाज हिरण मगरी ने आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर पर्व पर श्रीमती ललिता मेहरा एवं श्री मुकेश पाठक के नेतृत्व में भव्य प्रभात फेरी निकाली, जिसमें बहुत अच्छी संख्या में महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तत्पश्चात् समाज मंदिर में श्री रामदयाल जी के पौरोहित्य में पर्व विशेष पर यज्ञ का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि श्री अशोक आर्य ने सभा भवन पर ध्वजारोहण किया और श्रीमती सरला गुप्ता ने सामूहिक ध्वजगीत प्रस्तुत किया। तदुपरान्त धार्मिक सभा को सम्बोधित करते हुए श्री अशोक आर्य ने आज के ही दिन वर्तमान सृष्टि की उत्पत्ति व मानव के उद्भव पर स्वामी दयानन्द सरस्वती के दृष्टिकोण को प्रतिपादित करते हुए डार्विन के विकासवाद पर प्रश्नचिन्ह लगाया। उन्होंने कहा कि आज के ही दिन स्वामी जी ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। इस समाज के उद्देश्य एवं नियमों को स्मरण कराते हुए आर्यों को आत्मचिंतन कर अपने कर्त्तव्य कर्म करते रहने का आव्हान किया। इस अवसर पर दयानंद कन्या विद्यालय की छात्राओं ने चौराहों पर आगंतुकों का तिलक–प्रसाद द्वारा स्वागत किया।

गतांक से आगे

विकासवाद का वैदिक सिद्धान्त

(लेखक – आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक)

यह भी जानना आवश्यक है कि जिस प्रकार रासायनिक अभिक्रियाओं से भूमि रूपी माता के अन्दर प्राणियों की उत्पत्ति होकर सभी जरायुज, अण्डज तथा स्वेदज एक ही प्रकार से भूमि की परतों में उद्‌भिजों की भॉति युवावस्था में पैदा हुए, उसी प्रकार रासायनिक अभिक्रियाओं से विभिन्न वनस्पतियों के बीज भूमि की परतों में बनकर तथा आवश्यक पोषक पदार्थ पृथिवी पर ही मिल जाने से यत्र–तत्र पौधे, वनस्पति वा विशालकाय वृक्ष पूर्व में ही उत्पन्न हो गये थे। जिस प्रकार कोई प्राणी उत्पन्न होता है, उसका भोजन उसे तत्काल भूमि पर तैयार मिलता है। मनुष्यों के अनेकों नर–नारी जोड़े युवावस्था में भूमि पर प्रकट हुए, उस समय उसे पृथिवी फल, फूल व अन्न आदि से परिपूर्ण मिली और वे भूमि से निकल कर तत्काल ही फलादि उसी प्रकार खाने को प्रवृत्त हुए, जिस प्रकार आज बालक (मनुष्य वा गाय आदि पशु का) पैदा होते ही माता का दुग्धपान करने लगता है। इसमें कहीं कोई सन्देह वा शंका को अवकाश नहीं है। यह मैंने संक्षेप में मनुष्य की उत्पत्ति के विषय में लिखा। **मुझे बड़ा आश्चर्य है कि चार्ल्स डार्विन के पश्चात् उनके पुत्रों सहित अनेकों यूरोपियन वैज्ञानिकों ने भी इस मिथ्या विकासवाद का खण्डन किया परन्तु पाश्चात्य के दास बने कथित प्रबुद्धों के मस्तिष्क में अभी चार्ल्स डार्विन का भूत बैठा हुआ है।**

अब मैं संक्षेप में **पं. रघुनन्दन शर्मा** द्वारा लिखित पुस्तक **'वैदिक सम्पत्ति'** से कुछ वैज्ञानिकों के विचारों को भी उद्‌धृत करना चाहता हूँ–

सर ओलिवर लॉज लिखते हैं–

We are in the process of evolution; we have arrived in this planet by evolution. That is all right. What is evolution? Unfolding development-unfolding as a bud unfolds into a flower, as an acron into an oak. Every thing is subject to a process of growth, of development, of unfolding.

अर्थात् हम लोग विकास के ही प्रबन्धाधीन हैं। हम लोग विकास द्वारा ही इस पृथिवी ग्रह पर पहुंचे हैं। यह सब सत्य है, किन्तु विकास क्या है?विकास अबाधित उन्नति है। अबाधित अर्थात् कली से फूल हो जाने का नियम–बीज से वृक्ष हो जाने का मार्ग। प्रत्येक पदार्थ कली से फूल की भांति अबाधित उन्नति का ही फल है। (Science and Religion, p.16.) (वै. सम्पत्ति पृ.150)

There is manifest progress in the succession of being on the surface of the earth. This progress consists in an increasing similarity of the living fauna, and among the vertebrates especially, in their increasing resemblance to man .... But this connection is not the consequence of a direct linkage between the fauna of different ages. There is nothing like parental descent connecting them. The fishes of the Palaeozoik age are in no respect the ancestors of the reptiles of the secondary age, nor does man descend from the mammals which preceded him in the Tertiary age. The link by which they are connected is of a higher and immaterial nature and **Himself**, whose aim in forming the earth, in allowing it to undergo successively all

the different types of animals which have passed away, was to introduce man upon the surface of our globe. Man is the end towards which all the animal-creation has tended from the first appearance of the Palaeozoic fishes.

अर्थात् पृथिवी पर उत्पन्न होने वाले, बिना हड्डी के जन्तुओं और मनुष्यादि हड्डीदार प्राणियों में एक समान ही उन्नति देखी जाती है, परन्तु इस समानता का यह तात्पर्य नहीं है कि एक प्रकार के प्राणी दूसरे प्रकार के प्राणियों से ही विकसित हुए हों। आदिम कालीन मत्स्य ही, सर्पणशील प्राणियों के पूर्वज नहीं हैं और न मनुष्य ही अन्य स्तनधारियों से विकसित हुआ है। प्राणियों की श्रृंखला किसी **अभौतिक तत्व** से सम्बन्ध रखती है, जिसने पृथिवी पर अनेक प्रकार के प्राणियों की सृष्टि करके अन्त में मनुष्य की रचना की है। - Principles of Zoology, Pg. 205-206 by **Agassiz** (वै. सम्पत्ति पृ.150.151)How did living creatures begin to be upon the earth? In point of science, we do not know. अर्थात् विज्ञान के द्वारा हम नहीं जानते कि पृथिवी पर जीवधारी प्राणियों की सृष्टि कैसे हुई। Introduction to Science, Pg. 142 by **J.A. Thomson** (वै. सम्पत्ति पृ.152)

The question is : what was the manner of their being upon the previously tenantless Earth? Our answer must be that we do not know. अर्थात् इस उजाड़ पृथिवी पर प्राणी कैसे उत्पन्न हुए?इस प्रश्न का हम यही उत्तर देते हैं कि हम लोग नहीं जानते। .Evolution, Pg. 70 by **Prof. Patrick Geddes** (वै- सम्पत्ति पृ.152)

नवम्बर सन् 1922 के New Age नामक पत्र में Jones Bowson कहते हैं कि 'ब्रिटिश म्यूजियम (अजायबघर) का अध्यक्ष **डॉ. ऐथ्रिज** कहते हैं कि इस ब्रिटिश म्यूजियम में एक कण भी ऐसा नहीं है, जो यह सिद्ध कर सके कि जातियों (Species) में परिवर्तन हुआ है। विकास विषयक दस में नौ बातें व्यर्थ और निस्सार हैं। इनके परीक्षणों का आधार सत्यता और निरीक्षण पर बिलकुल अवलम्बित नहीं है। संसार भर में कोई भी सामान ऐसा नहीं है, जो विकास की सहायता करता हो।' (वै. सम्पत्ति पृ.170)

प्रथम विश्वयुद्ध के समय **'क्रिश्चियन हेरल्ड'** में यह समाचार छपा था कि ब्रिटिश साइंस सोसायटी का अधिवेशन मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) में हुआ। **प्रोफेसर विलियम वेटसन** इसके सभापति थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि 'डारविन का विकासवाद बिलकुल असत्य और विज्ञान के विरुद्ध है।' **प्रो. प्रेट्रिकगेडिस** कहते हैं कि For it must be admitted that the factors of the evolution of man partake largely of the nature of the may-be's which has no permanent position in Science. अर्थात् यह युद्ध इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य जैसा पहले था वैसा ही अब भी है। -Ideals of Science and Faith. (वै. सम्पत्ति पृ.212)

सर जे. डब्ल्यू डासन कहते हैं कि 'विज्ञान को बन्दर और मनुष्य के बीच की जाति का कुछ भी पता नहीं है। मनुष्य की प्राचीनतम अस्थियाँ भी वर्तमान मनुष्य जैसी ही हैं। इनसे उस विकास का कुछ पता नहीं लगता, जो इस मनुष्य–शरीर के पहले हुआ था।' (वै. सम्पत्ति पृ.170)

(क्रमशः)

पर्वोत्सव

नवसंवत्सरेष्टि एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस

नववर्ष की पूर्वसंध्या पर स्मृति भवन, जोधपुर में ज्ञानगंगा बही

चैत्र कृष्ण अमावस्या संवत् २०७४ शनिवार १७ मार्च २०१८ को नववर्षारम्भ की पूर्व संध्या को महर्षि की अंतिम कर्मस्थली महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन, जोधपुर की पवित्र यज्ञशाला में कविराज आचार्य वरुणदेवजी के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ के बाद उपस्थित आर्यजनों को संबोधित करते हुए चित्तौड़गढ़ से पधारे पंडित हरीश जी ने धर्म के तीन स्कन्धों में से एक यज्ञ के प्रथम मंत्र की व्याख्या की । व्याख्या के बीच में उन्होंने अन्न और अन्नदाता किसान की महिमा का वर्णन किया।

उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए आचार्य वरुणदेवजी ने पाखण्ड से सावधान करते हुए कहा कि जनसामान्य द्वारा तर्क, युक्ति और प्रमाण को हमेशा सामने रखा जाय, तो पाखण्ड चल ही नहीं सकता। आचार्य जी ने व्याकरण के आधार पर पितृ और पूजन शब्द की व्याख्या करते हुए बताया कि रक्षा करने वाले को पितर कहा जाता है और अपने पूज्यजनों की आज्ञा, इच्छादि का श्रवण करके उनकी पूर्ति करना उनका पूजन होता है, जो जीवित पितरों के मामले में ही संभव हो सकता है। आत्मा तो बिना शरीर के कुछ भी करने में समर्थ नहीं है। इसके अतिरिक्त कोई भी मनुष्य अपने स्वजनों का अहित नहीं करता। अतः मरने के बाद असमर्थ आत्मा के द्वारा काल्पनिक विनाश का भय दिखाकर लोगों का द्रव्य छीनना सज्जनों का कार्य नहीं है। आचार्य जी ने कहा कि मद्य–मांस का सेवन, गौहत्या आदि विशेष दिनों में ही नहीं, बल्कि सर्वदा त्याज्य है। अतः सदकर्मों को दिन विशेष से न जोड़कर सदा के लिए आवश्यक बताना चाहिए। शान्तिपाठ और जयकारों से सम्पन्न कार्यक्रम के बाद ऋषिलंगर का आयोजन किया गया।

आर्यसमाज महर्षि पाणिनिनगर जोधपुर

मगरा पूँजला स्थित आर्य समाज मंदिर,महर्षि पाणिनिनगर व नृसिंह जी की प्याऊ मार्केट एसोसियेशन के सयुक्त तत्वाधान में आयोजित भारतीय नववर्ष व आर्य समाज स्थापना दिवस बैनर का विमोचन श्री राजेन्द्रसिंह सोलंकी प्रतिपक्ष नेता नगर निगम जोधपुर के कर कमलो द्वारा किया गया। विमोचन कार्यक्रम में मार्केट एसों. अध्यक्ष जगदीश देवड़ा, दौलत सिंह, मदनलाल तंवर, भरत पंचारिया, भामाशाह लक्ष्मण सिहं सांखला, सोहनसिंह, दाऊलाल, श्रीमती वन्दना परिहार, भावना देवड़ा, जयसिंह, किशन सिंह, जगदीश पंवार, नृसिंह सुथार, लतेश भाटी, मेघराज गहलोत, धीरेन्द्र भाटी, भेरुसिंह माली, छँवरलाल, प्रदीप कच्छवाहा, मंयक देवड़ा, हीरालाल, श्यामसिंह, रामचन्द्र, देवीलाल, राजू देवड़ा द्वारा अतिथिओं का मालाओं से स्वागत किया गया।

प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया कि नववर्षारंभ चैत्र शु0 प्रतिपदा को प्रातः विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्म श्री शिवराम शास्त्री व गजेसिंह द्वारा नवसंवत्सर पर

जीव मात्र, समाज, परिवार, राष्ट्र में सुख–समृद्धि की वृद्धि की कामना से यज्ञ में आहुतियां दिलाई गईं। आर्यसमाज में सभी अतिथिओं का स्वागत नृसिंह जी की प्याऊ मार्केट एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री जगदीश देवड़ा व श्री भँवराराम कुमावत द्वारा ओ३म् का दुपटा पहनाकर किया गया। यज्ञोपरांत आर्यसमाज के सामने चौराहे पर आने जाने वाले पथिकों को आर्यों व शैक्षणिक संस्थाओं के बच्चों ने कुमकुम तिलक लगाकर, मुँह मीठा कराकर नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ दी गई। इस कार्यक्रम में भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह गहलोत, माली संस्थान के अध्यक्ष श्री पुखराज सांखला, राकेश परिहार, दयानन्द स्मृति भवन न्यास मंत्री आर्य श्री किशनलाल गहलोत, निर्मल सोंलकी, हरिसिंह, अखेसिंह, नरेन्द्र सिंह, दौलतसिंह, जयंत सांखला, युधिष्ठर, मनीष गहलोत, जयसिंह, गौरव सोनी, डॉ.महेश परिहार, दाऊलाल परिहार, मदनलाल तंवर, श्रीमति चन्द्रकांता भाटी, संतोष आर्य, ललिता सांखला, मंधु सांखला, भावना देवड़ा, सरोज भाटी, अशोक, विक्रमसिंह, लक्ष्मणसिंह, शेरसिंह, कुशजीत कच्छवाहा, ओ.पी.भाटी, मनोहरसिंह, अशोक, भगवान, श्रवण, डी.पी.शर्मा एवं जोधपुर के आर्य समाजों के सदस्य एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। अन्त में म.द.सर.स्मृ. भवन न्यास के मंत्री आर्य किशनलाल द्वारा धन्यवाद दिया।

आर्यसमाज मगरा–पूँजला जोधपुर

आर्यसमाज मगरा–पूँजला जोधपुर में नववर्ष व आर्य समाज स्थापना दिवस चंत ध्वजोरोहण पं० हरिश्चन्द्रजी विद्यावाचस्पति, चित्तौड़गढ़ द्वारा किया गया तथा श्री राजेन्द्रप्रसाद वैष्णव के ब्रह्मत्व में यज्ञोपरान्त पं० हरि चन्द्रजी ने कहा कि जहाँ "मम" की भावना होती है, वहॉ नरक और जहाँ "न मम" की भावना होती है, वहॉ स्वर्ग होता है। श्री विमल शास्त्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि घोर आडम्बर, पाखण्ड के अंधकार रूपी वातावरण एवं परतंत्रता की स्थिति में वैदिक धर्म की पुर्नस्थापना के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की। समाज के प्रधान श्री सम्पतराज जी देवड़ा ने बताया कि इस अवसर पर संरक्षक श्री जगदीशसिंह आर्य, मंत्री श्री महेश गहलोत, श्री हुकमसिंह सॉखला, श्री हंसराज गहलोत, श्री अर्जुनसिंह गहलोत, श्री प्रकाश सॉखला, श्री थानसिंह गहलोत सहित अन्य आर्यजन उपस्थित थे।

नगर आर्यसमाज गुलाबसागर जोधपुर

नगर आर्यसमाज गुलाबसागर जोधपुर में नवसंवत्सरेष्टि एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस पर प्रातः विशेष यज्ञ हुआ। यज्ञोपरांत समाज के सभी सदस्य आर्यसमाज जालोरियां का बास के ३४ वार्षिकोत्सव के साथ नवसंवत्सरेष्टि एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

आर्यसमाज जालोरियाँ का बास जोधपुर

आर्यसमाज जालौरियां का बास जोधपुर का ३४ वॉ वार्षिक उत्सव एवं नववर्ष स्वागत कार्यक्रम प्रातः नौ बजे शहर के सबसे ऊंचे नवनिर्मित ध्वज स्थल पर आर्यसमाज के मंत्री श्री श्याम आर्य द्वारा ओम ध्वज के प्रथम ध्वजारोहण से प्रारंभ हुआ। ध्वजारोहण पश्चात् साढ़े नौ बजे से बारह बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों में सर्वप्रथम श्री कमलकिशोर आर्य के पौरोहित्य में दो यज्ञवेदियों पर संपन्न हुए यज्ञ में सर्व श्री राजेश कुमावत, राकेश सॉखला, रामेश्वर सोलंकी, मुकेश चौहान, गजेसिंह चौहान, संदीप परिहार, चंद्रप्रकाश तॅवर व श्रीमती श्यामा सांखला के साथ सुश्री वंशिका परिहार यजमान बने। यज्ञोपरांत श्रीमती शांति देवी जी ने ईश्वर भक्ति का भजन "कण कण में जो रमा है", डॉक्टर आर्य त्रिलोक सॉखला ने "दयानंद देव वेदों का उजाला लेके आए थे", आर्यवीर भरत द्वारा "ऋषि दयानंद ने जगाया हमारे बाजू हिला हिला कर" व बालिका सृष्टि चौहान ने "जिन्हें संसार में संसार का उपकार करना था" गाकर सब को विभोर कर दिया। नगर आर्य समाज गुलाब सागर जोधपुर के प्रधान श्री बुद्धि प्रकाश आर्य ने सृष्टि चौहान को अल्पायु में सुन्दर व प्रेरक गीत के लिए नकद पुरस्कार से प्रोत्साहित किया। श्री अशोक दईया एवं श्री पूरण सिंह चौहान ने भी संयुक्त रूप से भजन प्रस्तुत किया। इस आर्यसमाज के पूर्व प्रधान श्री राम स्वरूप आर्य ने श्रोताओं से अंधविश्वास छोड़ने का आह्वान करते हुए कहा कि आर्य समाज को अपनाए बिना समाज का सुधार संभव नहीं है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कमल किशोर आर्य ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम हमें और हमारे लिए सृष्टि रचाने वाले परमात्मा के विषय में तो भ्रम छोड़ें। परमात्मा सृष्टि से पहले भी था। अतः जिसे परमात्मा मानकर हम उपासना करें, कृपया उससे पूर्व सोचें कि क्या यह सूर्य और चन्द्र से पूर्व भी था? क्या इसी ने सृष्टि और हमें बनाया है या हमने इसे परिवार के लिए व्यक्ति का, गॉव के लिए परिवार का, जनपद के लिए गाँव का त्याग उचित माना गया है किन्तु आत्मा के लिए तो पृथ्वी अर्थात् दुनिया ही निर्भय होकर छोड़ देनी चाहिए। तर्क, युक्ति और प्रमाण का सदैव उपयोग करें और अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई कार्य न करें। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मंत्री श्याम आर्य ने यज्ञ प्रक्रिया में पौराणिक अंधविश्वासों को दूर रखने का आव्हान किया। कार्यक्रम में नगर आर्य समाज के सदस्यों की उपस्थिति विशेष प्रभावशाली रही । कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य वीरों सन्नी आर्य, राकेश सॉखला, प्रदीप कच्छवाह, अंशु सोलंकी, अमित ओझा, कपिल, कार्तिक, गौरव, गोल्डी, प्रदीप गहलोत, संदीप परिहार आदि का विशेष सहयोग रहा। समाज के प्रधान श्री बजरंग सिंह ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम समाप्ति पर सभी एक दूसरे को नववर्ष की बधाई देते ऋषि लंगर में भोजन कर विदा हुए। (नव वर्ष की सभी फोटो **द्वितीय आवरण पृष्ठ पर)**

भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु की याद में वाहन रैली

२३ मार्च २०१८ की सायंकाल पावटा सी रोड़ स्थित आर्य समाज महामन्दिर व क्रान्तिकारी पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल व्यायामशाला के तत्वावधान में शहीदों की याद में रैली का अयोजन किया गया। आर्यसमाज महामंदिर के प्रधान श्री हेमसिंह आर्य ने बताया कि शहीद भगतसिंह, सुखदेव व राजगुरु की याद में रैली को पूर्व जेडीए अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह सोलंकी द्वारा ओ३म् का ध्वज दिखाकर आर्य समाज से रवाना किया गया। यहां से पावटा सी रोड़, बी.जे.एस.चौराहा, बाबू लक्ष्मण सिंह चौराहा, महामन्दिर चौराहा, ज्योतिबा फुले चौराहा, नागोरी गेट चौराहा से पावटा चौराहा, राजीव गॉधी सर्कल होते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति आकर सम्पन्न हुई जहॉ आचार्य वरुणदेवजी, मंत्री किशनलाल, कैलाशचन्द्र, रामेश्वर जसमतिया, विक्रम सिंह आदि ने फूलों से स्वागत किया। सभा में श्री मदनलाल तॅवर, आर्यवीर भगवान परिहार व अशोक आर्य के प्रेरक गीतों व कविताओं के बाद आचार्य वरुणदेव जी ने क्रांन्तिकारियों के जीवन पर उद्‌बोधन देते हुए कहा कि क्रान्तिकारियों ने स्वतंत्रता के लिए प्राण दिए थे, किन्तु स्व (अपने ऋषियों का बनाया) तंत्र आया नहीं है। सिर्फ सत्ता का हस्तान्तरण मात्र हुआ है। तंत्र विदेशी ही है। इसलिए अभी आजादी अधूरी है। आर्यवीरों को इसे ध्यान में रखकर संपूर्ण स्वतंत्रता को लक्ष्य बनाना चाहिए। इस रैली में गोपाल आर्य, प्रदीप आर्य, राजस्थान बोक्सिग संचालक जगदीश प्रसाद आर्य, यशोदा जी आसेरी, कुलदीप, महेन्द्र, नरपत भाभा, मनीष, नरेन्द्र सिंह, सोहनसिंह, शिवराम, अमृतलाल, विक्रम, मुकेश, समुन्द्रसिंह, सुनील, अदिति आर्या, प्रवीण आर्य, कपिल मलिक, सुभाष, बंशीलाल, रमेश आर्य, चेतन प्रकाश, धीरज, देवीलाल व आर्य समाज पाणिनिनगर के आर्यवीरों, आर्य समाज सुरसागर, शास्त्रीनगर, नगर के पदाधिकारी भी सामिल थें। न्यास के मंत्री आर्य किशनलाल व नरेन्द्र सिंह गहलोत ने सभी अतिथिओं व आर्य वीरों को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के अंत में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। (सभी फोटो **तृतीय आवरण पर)**

लेखकों से निवेदन

इस पत्रिका का उद्देश्य महर्षि मिशन को प्रचारित-प्रसारित करना हैं। आर्य जगत के चिंतकों और लेखकों से निवेदन है कि ऋषि मिशन की पूर्ति में सहयोग हेतु अपनी रचनाओं को प्रकाशनार्थ भिजवाएं। रचनाएँ महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के पते पर या sampadakmdsprakash@gmail.com **के पते पर ईमेल से भी भेजी जा सकती हैं।**

—संपादक

सिरोही महाराजकुमार का स्मृति भवन में स्वागत

चैत्र कृष्णपक्ष दशमी संवत् २०७४ सोमवार १२ जनवरी को महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में सिरोही के महाराजकुमार श्री रघुवीरसिंह जी का स्मृति स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। स्मृति भवन में विराजमान आर्यजगत् के मूर्द्धन्य विद्वान् आचार्य सत्यानन्दजी वेदवागीश से वार्ता कर महाराजकुमार गद्‌गद् हो गए। उन्हानें कविराज आचार्य वरुण द्वारा संचालित सायंकालीन दैनिक यज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में सहभागिता की। यज्ञोपरान्त महाराजकुमार ने आचार्य वरुण जी से यज्ञ की वैज्ञानिकता पर चर्चा की। साथ ही आर्श और पौराणिक यज्ञ पद्धतियों में भेद, यज्ञ के सुनिश्चित परिणामों, यज्ञ के संबंध में शास्त्रीय उक्तियों, यज्ञ के प्रभावक्षेत्र, यज्ञकुण्ड व मेखला के परिमाण व संरचना, देवताओं, मूर्ति में प्राणप्रतिष्ठा आदि अनेक विषयों पर चर्चा की। आचार्य वरुणजी ने सप्रमाण, सुरुचिपूर्ण ढंग से इन सब विषयों पर आर्श पक्ष रखा जिससे महाराजकुमार संतुष्ट हुए और उपस्थित आर्यजनों ने भी ज्ञानलाभ पाया।

यज्ञशाला में उपस्थित आर्यजनों को संबोधित करते हुए महाराजकुमार ने कहा कि दुनिया आज चमत्कार को ही नमस्कार करती है। अतः महर्षि दयानन्द के अनुयायियों को यज्ञ सहित अन्य वैदिक मान्यताओं के सुनिश्चित परिणाम दुनिया के सामने लाने का प्रयास करना चाहिए। महाराजकुमार ने स्मृति भवन का अवलोकन किया।

न्यास द्वारा निःशुल्क होम्योपेथी चिकित्सालय का शुभारम्भ

नववर्षारम्भ चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा संवत् २०७५ को महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास द्वारा निःशुल्क होम्योपेथी चिकित्सालय का शुभारम्भ किया गया है।

रातानाडा में महर्षि दयानन्द मार्ग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, के पुराना परिसर के पास स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन के मुख्य द्वार पर जन साधारण के लिए आरम्भ हो रहे इस निःशुल्क होम्योपेथी चिकित्सालय में अनुभवी चिकित्सक डॉ. पीयूष टाक अपनी सेवाएँ देंगे।

न्यास द्वारा चिकित्सालय से ही निःशुल्क औषधी वितरण की भी सुविधा दी जा रही है।

सिरोही के महाराजकुमार श्री रघुवीरसिंह म हर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन यज्ञशाला में आचार्य वरूण के साथ यज्ञाहुति देते हुए एवं वेद विज्ञान पर चर्चा करते हुए

23 मार्च शहीद दिवस पर आर्य समाज महामन्दिर से महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन तक वाहन रैली

23 मार्च शहीद दिवस पर आर्य समाज महामन्दिर से महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन तक वाहन रैली

23 मार्च शहीद दिवस पर महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में सम्बोधन देत श्री मदनलाल तंवर एवं आचार्य श्री वरुणदेवजी

Postal Reg. Jodhpur/434/2018-20

Date Of Posting 9,10-4-2018
Date Of Print 5-4-2018

पाकविस्थापित हिन्दू शरणार्थियों के साथ श्रीरामनवमी पर्व मनाते
आर्य समाज पाणिनिनगर व मगरापूंजला के सदस्य

सत्वाधिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के लिए प्रकाशक व मुद्रक विजयसिंह भाटी द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, महर्षि दयानन्द मार्ग, मोहनपुरा पुलिया के पास जोधपुर (राज.) से प्रकाशित एवं सैनिक प्रिण्टर्स, मकराणा मोहल्ला केरू हाऊस जोधपुर फोन नं. 9829392411 से मुद्रित ।

सम्पादक फोन नं. 9460649055

Book-Post